(मासिक)

ज्ञानामृत

वर्ष 51, अंक 10, अप्रैल, 2016,
मूल्य 8.50 रुपये, वार्षिक शुल्क 100 रुपये

शान्तिवन (आबू रोड) - 80वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती के उपलक्ष्य में शिव ध्वजारोहण करते हुए राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी जी, ब.कु. निर्वैर भाई, ब.कु. बृजमोहन भाई, ब.कु. मोहिनी बहन, ब.कु. मुन्नी बहन एवं अन्य।

1.नागपुर- 'जीवन के सौन्दर्य का आनंद' विषयक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. शिवानी बहन, भ्राता सुरेश ओबेराय, ब्र.कु. पुष्पा बहन, सांसद भ्राता विजय दर्डा एवं भ्राता सुशील अग्रवाल। 2.मुंबई - रिकॉर्डिंग के बाद सुप्रसिद्ध गायिका आशा भोंसले को ईश्वरीय सौगात देते हुए गायक भ्राता जयगोपाल लूथरा एवं ब्र.कु. दिव्या बहन। 3.अमृतसर - शिवरात्रि शोभा यात्रा के शुभारंभ अवसर पर मंचासीन हैं मेयर भ्राता बख्शी राम अरोड़ा, ब्र.कु. राज बहन, ब्र.कु. आदर्श बहन एवं अन्य। 4.दिल्ली (पांडव भवन)- शिवजयंती कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. पुष्पा बहन, पिछड़ा वर्ग राष्ट्रीय आयोग के अध्यक्ष भ्राता वी.ईश्वरैय्या, पूर्व समाज कल्याण मंत्री भ्राता सुरिन्दर पाल रातावाल, पेप्सीको कंपनी के उपाध्यक्ष भ्राता अजय खन्ना एवं अन्य। 5.दिल्ली (सिविल लाइंस) - शिवरात्रि अवसर पर ध्वजारोहण करते हुए दिल्ली उच्च न्यायालय के न्यायाधीश भ्राता सुनील गौर, एम.सी.डी. के कमिश्नर भ्राता अजय गुप्ता, ब्र.कु. मीरा बहन तथा अन्य। 6.रायपुर - शिव दर्शन आध्यात्मिक मेले का उद्घाटन करते हुए न्यायमूर्ति भ्राता एल.सी. भादू, राज्य योजना आयोग के सदस्य पी.पी. सोती, ब्र.कु. कमला बहन एवं ब्र.कु. सविता बहन। 7.शिमला - हिमाचल विधानसभा अध्यक्ष भ्राता बृजबिहारी लाल को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. प्रकाश भाई। साथ में डॉ. किशोर भाई एवं धर्मपाल भाई। 8.पानीपत (हुड्डा कालोनी)- 'सशक्त महिला, सशक्त समाज' विषयक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए वरिष्ठ नागरिक केसरी क्लब की अध्यक्षा बहन किरण चोपड़ा, विधायिका बहन रोहिता रेवड़ी, ब्र.कु. सरला बहन, ब्र.कु. सुनिता बहन तथा अन्य।

संजय की कलम से

समाज में नारी का प्रतिष्ठित पद

कोई देश अथवा समाज कितना उन्नतिशील है अथवा रहा है, यह वहाँ की नारी समाज की अवस्थाओं से आंका जा सकता है। जिस देश में विदुषी, चरित्रवान एवं सद्‌गुण सम्पन्न नारियाँ होंगी, वह देश निरन्तर प्रगति पथ पर अग्रसर होता रहेगा। नारियों में सृजनात्मक शक्ति की बहुलता एवं इच्छा शक्ति की दृढ़ता होने के कारण स्व-स्थिति से परिस्थिति बदल देने की महान शक्ति निहित है। आवश्यकता है उसकी अन्तर्निहित शक्तियों को विकसित एवं प्रज्वलित करने की।

सदियों की गुलामी एवं पर्दा-प्रथा जैसी कुरीतियों ने तो नारी को पंगु और मूक बना ही दिया था, नारी को पदच्युत करने में धर्मनेताओं का भी बड़ा हाथ रहा है। किसी के द्वारा नारी को माया का रूप अथवा स्वयं ही माया कहा गया, किसी के द्वारा नारी को सर्पिणी और नागिन कहकर पुरुषों के अपवित्र एवं विकारी बनने में सम्पूर्ण दोष नारी के ऊपर ठोक दिया गया।

यहाँ पर विशेष उल्लेखनीय बात यह है कि इतना सब सुनने के बाद भी नारी ने पुरुषों के प्रति कोई ग्लानिपूर्ण बात नहीं कही, न प्रतिशोध-वश 'नाग' अथवा 'सर्प' ही कहा क्योंकि नारी जानती है कि इन पुरुषों को जन्म देने वाली भी नारियाँ हैं, अत: उन्हें अपमान-सूचक शब्द बोलना जैसे स्वयं को ही बुरा कहना है। कुछेक विचारकों ने नारी की स्तुति एवं प्रशंसा करते हुए उसे श्रद्धा अथवा अबला कहा। इस प्रकार कहीं अवहेलना मिली तो कहीं प्रशंसा तथा इस अपेक्षा और उपेक्षा के पालने में झूलती नारी आज तक भी निश्चित नहीं कर पाई कि आखिर भी वह है क्या?

नारी नरक का द्वार नहीं है बल्कि ज्ञानवान एवं योगिन नारियों द्वारा ही परमात्मा शिव अपने अवतरण काल में स्वर्ग का द्वार खुलवाते हैं। माता गुरु के बिना संसार का कल्याण नहीं हो सकता इसलिए ज्ञान-कलश माताओं के सिर पर ही रखा गया है। सारांश में विश्व की गति-सद्‌गति का आधार भी मातायें ही बनती हैं। इसलिए शिव के साथ शक्तियों का गायन है।

भौतिक, वैज्ञानिक, राजनैतिक क्षेत्र में उन्नति करने पर भी महिलायें पूजा के योग्य नहीं बन सकतीं क्योंकि पूजा सदैव पवित्र की होती है। ऐसे पूजनीय पद की प्राप्ति भी उसी के द्वारा हो सकती है जो सदा पवित्र हो और वह मात्र निराकार परमात्मा शिव ही हैं जो नारियों को श्री लक्ष्मी व श्री सीता जैसा पवित्र एवं पूजनीय बना रहे हैं। श्री लक्ष्मी, श्री सीता जैसी गुणशीला माताओं की कोख से निस्सन्देह दैवी गुण सम्पन्न देवता ही जन्म लेते हैं। वर्तमान संगमयुग पर नारियों के पुनरुत्थान का कार्य स्वयं परमात्मा द्वारा सम्पन्न हो रहा है। नारी-जाति का पुनरुत्थान होने पर एक नई दैवी सम्पदा जन्म लेती है। ❖

अमृत सूची

- भौतिक और आध्यात्मिक अस्तित्व (सम्पादकीय) 4
- लेखकों से निवेदन...............6
- आलोचना से भागो मत, जागो ...6
- दिलाराम को दिल में रखने वाले .7
- बाबा को अपने पास महसूस 8
- प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के ...9
- गुप्त शक्ति मुझे चला रही है 11
- जंगली मक्खियों से बचाया 12
- संविधान के पूर्व का विश्व......13
- बाबा ने की धन की रक्षा 15
- तनाव और हमारी प्रतिक्रिया ...16
- श्रद्धांजलि......................17
- मानसिक विकलांगता से बचें ...18
- दिल में बसने वाले.. (कविता) .20
- सब बोझ दे दो बाबा को........21
- रहमदिल बाबा बच्चों की 22
- मानव जीवन में धन 23
- एक पत्र, प्रिय आत्मिक 26
- मन से बातें 27
- चैतन्य शक्ति का प्रथम 28
- अतीन्द्रिय नशा 29
- खेल स्मृति और विस्मृति का ...30
- वाह बाबा वाह! 31
- सफल हो रहा है 32
- सचित्र सेवा समाचार 33
- आवश्यक सूचना..............34

सदस्यता शुल्क

भारत	वार्षिक	आजीवन
ज्ञानामृत	100 /-	2,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	100/-	2,000/-
विदेश		
ज्ञानामृत	1,000 /-	10,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	1,000/-	10,000/-

शुल्क केवल '**ज्ञानामृत**' अथवा '**द वर्ल्ड रिन्युअल**' के नाम से ड्राफ्ट या मनीऑर्डर द्वारा भेजने हेतु पता है- संपादक, ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस, ज्ञानामृत भवन, **शान्तिवन- 307510 (आबू रोड) राजस्थान।**

शुल्क के लिए सम्पर्क करें -
09414006904, 09414423949
hindigyanamrit@gmail.com

भौतिक और आध्यात्मिक अस्तित्व

कई बार हम कहते हैं कि अमुक बात मेरे मन को लग गई। हमें जानना पड़ेगा कि यह मन, जिसको बातें लग जाती हैं, कौन है, कहाँ है, कैसा है? जैसे कपड़े पर दाग लग जाता है तो उसे निकालने के लिए बहुत प्रकार के केमिकल्स हैं पर मन पर लगी और छपी दाग जैसी बातों को कैसे निकालें? आज के युग में शरीर के डॉक्टर कम और मन के डॉक्टर ज्यादा हैं क्योंकि बुखार आदि तो किसी-किसी को चढ़ता है परंतु फीलिंग, मूड ऑफ, भारीपन, याददाश्त की कमी, उदासी आदि तो छोटे-बड़े अधिकतर में हैं।

नकारात्मक प्रतिक्रियाओं से कैसे बचें ?

हमें अपने घर में और अपने कार्यक्षेत्र के दायरे में पल-पल ऐसे लोग मिलते हैं, जो हमारा अपमान कर देते हैं, हमें हीन दृष्टि से देखते हैं, हमारी अयोग्यताओं का सरेआम बखान कर देते हैं, हमारे उमंग-उत्साह को मन्द कर देते हैं और पुरानी बातों का वर्णन कर गड़े मुर्दे उखाड़ते हैं। कार्य की शुरूआत में ही कोई नजदीकी कह देता है, तुमसे काम होगा ही नहीं, सफलता तुमको मिल ही नहीं सकती, अमुक समय पर तुम असफल हुए थे, तुम्हारे भाग्य में सफलता है ही नहीं, तुमको काम करना आता ही नहीं। अगर बार-बार इस प्रकार की बातें सुनते रहें तो मनोबल कम हो जाता है। कई बार तो इस नकारात्मकता के प्रभाव में सही कार्य करना भी बन्द कर देते हैं। इस प्रकार की नकारात्मक और अनावश्यक प्रतिक्रियाओं से कैसे बचें?

साइलेन्स द्वारा संचालित ए.सी.

मान लीजिए, बाहर बहुत गर्मी है तो हमने अपने कमरे में ए.सी.चलाकर अपने शरीर को तथा उपभोग्य पदार्थों को शीतल कर लिया। हमने ना तो सूर्य का चमकना बन्द किया, ना गर्मी की ऋतु में कोई फेर-बदल किया। फिर भी शीतल रहने की ताकत हममें कैसे आई? साइंस ने हमें यह शक्ति दी। साइन्स ने ऐसा साधन खोज निकाला कि हमारे कमरे की हवा की गर्मी को उसने बाहर निकाल दिया। हमने खिड़की-दरवाजे बन्द कर ठण्डी हवा को सुरक्षित कर लिया और बाहर की गर्म हवा के अन्दर आने के मार्ग भी बन्द कर दिए जिससे बाह्य जगत में 45° तापमान होने पर भी हमारे कमरे में 18° तक भी रह सकता है। हम सबके भीतर भी एक स्वाभाविक ए.सी. है जो साइलेन्स की शक्ति से संचालित है। जब बाह्य जगत की कोई भी कटु बात, कटु दृष्टि, कटु व्यवहार भीतर प्रवेश करने की कोशिश करते हैं तो साइलेंस की शक्ति द्वारा संचालित आंतरिक ए.सी.के प्रभाव क्षेत्र में वह प्रवेश नहीं कर पाती, बाहर की बाहर ही रह जाती है और हम देखते, सुनते, जानते हुए भी उस कड़वाहट से अप्रभावित रहते हैं जैसे हम गर्मी से अप्रभावित रहे। साइलेंस की शक्ति आती है आध्यात्मिक ज्ञान से।

विस्मृत है आत्मा को मूल स्वरूप

आध्यात्मिक ज्ञान हमें बताता है कि हमारे दो अस्तित्व हैं, एक है भौतिक और दूसरा है आध्यात्मिक। भौतिक अस्तित्व 5 तत्वों से बना है। इन तत्वों में जीवन नहीं है। उनसे बने शरीर में भी जीवन नहीं है। तो शरीर में चेतनता कहाँ से आई? यह चेतनता आत्मा की है, आत्मा के प्रवेश होने पर शरीर चेतन हो जाता है। नकारात्मक संकल्पों या प्रतिक्रियाओं का बुरा असर भी इसी चेतन आत्मा पर होता है, मुर्दे को कोई कुछ भी कहता रहे, कोई असर नहीं होता। आत्मा पर बाहरी गलत बातों का असर क्यों हो जाता है? इसका कारण यह है कि उसे अपनी शक्तियों की पहचान नहीं है। यदि आत्मा को अपने मूल स्वरूप का ज्ञान हो कि मैं ऐसी हूँ तो दूसरे की कही हुई बात का असर

नहीं आएगा। चूँकि उसे अपना असली रूप विस्मृत है इसलिए दूसरों द्वारा कही गई सकारात्मक या नकारात्मक बात का तुरन्त असर आ जाता है।

चाहना होती है मूल चीज की

इसलिए स्प्रिच्युलिटी (Spirituality) का अर्थ है स्पीरिट इन रियलिटी (Spirit in reality) अर्थात् आत्मा का वास्तविक स्वरूप। हिन्दी में अध्यात्म का अर्थ है आत्मा का अध्ययन। जैसे कोई शोधकर्त्ता किसी धातु का अध्ययन करता है, तो सबसे पहले देखेगा कि उस की मूलभूत विशेषताएँ क्या हैं, जब इसमें कोई चीज मिला दी जाती है तब इसकी मूल विशेषताओं पर क्या असर पड़ता है, इसका भार कितना हो जाता है, रंग कैसा हो जाता है आदि-आदि। जैसे 24 कैरेट सोना हलका होता है पर अन्य धातु की मिलावट होने पर भारी हो जाता है। इसी प्रकार हम देखें, आत्मा की मूल योग्यताएँ कौन-सी हैं? ये सात हैं – ज्ञान, पवित्रता, शान्ति, सुख, आनंद, प्रेम, शक्ति। मानव हमेशा इनको ही चाहता है। चाहना मूल चीज की ही होती है। मान लीजिए, शरीर में मूल रूप में पानी 67 प्रतिशत होता है पर घटकर 64 प्रतिशत हो गया तो हम पानी ही पीना चाहेंगे अन्य कुछ पीने की रुचि नहीं होगी। इसी प्रकार, शरीर में यदि पृथ्वी तत्व 33 प्रतिशत है और वह कम होकर 30 प्रतिशत पर आ गया तो हम भोजन ही खाना चाहेंगे ताकि वह पुनः अपने मूल स्तर पर पहुँच जाए।

चलता रहेगा कुचक्र

इसी प्रकार आत्मा भी अपने मूल गुणों की मांग करती है। मान लीजिए, हम किसी ऐसे माहौल में, ऐसे लोगों के बीच या ऐसे कार्य में उलझ गए जिसमें मन की शान्ति काफी खर्च हो गई और मन शान्ति-शान्ति पुकारने लगा। सच्ची शान्ति की प्राप्ति के स्रोत दो ही हैं, एक तो अपने भीतर उतरकर शान्ति का चिन्तन करें, अपने स्वरूप को याद करके उसमें स्थित हो जाएँ। इससे शान्ति की जो कमी अन्दर निर्मित हुई है वह भर जाएगी। दूसरा तरीका है, शान्ति के सागर परमात्मा से अपने मन को जोड़ दें जिससे उनकी शान्ति आत्मा में भर जाएगी। यह शान्ति प्राप्ति का सही तरीका है पर गलत तरीके भी हैं। जैसे व्यसन पदार्थों का प्रयोग, बाहरी जगत के आकर्षणों से मन बहलाव। इनसे अल्पकाल के लिए मन अपनी अशान्ति को भूलेगा परन्तु हम जानते हैं, सीरियल कितनी देर चलेगा, दोस्त कितनी देर साथ देंगे, सिगरेट, शराब कितनी पी सकेंगे, इन्जेक्शन कितने लगवा सकेंगे। आखिर तो इनका असर खत्म होगा और दबी हुई अशान्ति पुनः इमर्ज हो जाएगी। इन चीजों ने शान्ति दी नहीं पर अशान्ति से थोड़ी देर ध्यान हटा दिया। इनका असर खत्म होते ही पुनः अशान्ति आई। उसे दबाने के लिए पुनः इन अल्पकालीन आकर्षणों में डूबे। इससे मानसिक, शारीरिक स्वास्थ्य बिगड़ गया। क्रोध उत्तेजना, उतावलापन, अधिक निद्रा, भूख बन्द होना, अधिक धन की जरूरत, कर्त्तव्यों से दूरी आदि परिणाम झेलने पड़े। इस प्रकार कुचक्र चलता रहेगा।

शुद्ध प्रेम प्राप्त होता है परमात्मा से

जैसे शान्ति का स्तर कम होने पर आत्मा शान्ति चाहती है ऐसे ही प्रेम का स्तर कम होने पर उसे प्रेम की आवश्यकता पड़ती है। शुद्ध प्रेम का अर्थ है देने की भावना, ऊँचा उठाने की भावना, कल्याण की भावना परन्तु मोह और काम की मिलावट से शुद्ध प्रेम विकृत हो जाता है। आवरण प्रेम का हो जाता है भीतर लोभ, ईर्ष्या, स्वार्थ और न जाने क्या-क्या गन्दगी भर जाती है। शुद्ध प्रेम आत्मा से या परमात्मा से प्राप्त होता है। स्वयं को स्वरूपस्थ करके हम चिन्तन करें, ''मैं प्रेम स्वरूप आत्मा हूँ, प्रेम मेरा मूल गुण है, मुझे सबको प्रेम देना है, बदले में मुझे स्वतः मिलेगा।'' इस प्रकार के चिन्तन से आत्मा में प्रेम का स्तर बढ़ जाएगा। दूसरा, अपने मन-बुद्धि को परमात्मा से जोड़ने से उनका प्रेम-निर्झर आत्मा पर उतरने

लगेगा और आत्मा प्रेम से तृप्त हो जाएगी।

शान्ति-प्रेम की तरह अन्य पाँच मूल गुणों का स्तर बढ़ाने की विधि भी यही है। अन्दर इनका स्तर बढ़ जाने से, बाहरी जगत में इनके विपरीत भावों का वातावरण या आक्रमण होने पर भी आत्मा स्वयं तो सुरक्षित रहती ही है, दूसरों के लिए भी रक्षा-कवच बन जाती है और विपरीत भावों को परिवर्तन कर उन्हें अपने सहयोगी भाव बना लेती है। अत: प्रतिदिन कुछ समय एकान्त में बैठकर अपने को देखने और परमात्मा से जुड़ने का अभ्यास जरूरी है, इससे भौतिक और आध्यात्मिक दोनों अस्तित्व शक्तिशाली बन जाएंगे।

– ब्र.कु. आत्म प्रकाश

लेखकों से निवेदन

- जीवन-अनुभव के लेखों को निमित्त शिक्षिका के हस्ताक्षर के साथ भेजें।
- लेख और कवितायें साफ-साफ लिखें। यदि टाइप कराके भेजना चाहें तो आप पोस्ट द्वारा या ई-मेल gyanamritpatrika@bkivv.org पर भेजें।
- अपनी रचना के साथ अपना पूरा पता, फोन नंबर, ई-मेल, संबंधित सेवाकेन्द्र का नाम, जोन तथा टीचर का नाम भी अवश्य लिखें।
- जो भी रचना भेजें, उसकी एक कॉपी अपने पास अवश्य रखें।

आलोचना से भागो मत, जागो

ब्रह्माकुमार रामसिंह, रेवाड़ी

कहते हैं, एक व्यक्ति किसी देश का राष्ट्राध्यक्ष बना और पद सम्भालते ही उसने अपने मुख्य सचिव को आदेश दिया कि वह उसके आलोचकों की सूची तैयार करे और ध्यान रखे कि जिसने कभी भी, चाहे थोड़ी ही आलोचना की हो उसका नाम भी इस सूची में अवश्य डाले। सचिव ने तुरन्त ही सूची तैयार की। अब उसे आदेश मिला कि जो कट्टर आलोचक हैं उनके नाम अलग छाँट ले। सचिव ने वैसा ही किया और पूछा, श्रीमान जी, बताइये इन सबके साथ कैसा व्यवहार किया जाए? इन्हें क्या सज़ा दी जाए?

राष्ट्राध्यक्ष ने कहा, कैसी सज़ा? इन सभी को सम्मानपूर्वक यहाँ बुलाया जाए। मैं इन्हें अपना प्रमुख सलाहकार नियुक्त करना चाहता हूँ। यह सुनकर सचिव को बहुत आश्चर्य हुआ। सचिव के चेहरे पर छाई आश्चर्य की लकीरों को देख राष्ट्राध्यक्ष ने कहा, आज मैं जिस पद पर पहुँचा हूँ उसमें इन सभी लोगों का बड़ा योगदान है। समय-समय पर मेरी आलोचना करके यदि ये मुझे सचेत नहीं करते तो शायद इतनी जल्दी मैं इस पद पर नहीं पहुँच पाता।

हम भी आलोचकों से कभी आहत न हों बल्कि उन्हें चुनौती मानकर आगे बढ़ें। आत्म निरीक्षण करें। अपनी गलतियों को सुधारें। इससे हम अपने लक्ष्य को बड़ी जल्दी प्राप्त कर लेंगे। अनुचित आलोचना, छिपी हुई प्रशंसा होती है। जब भी कोई व्यक्ति परम्परा से हटकर कोई अच्छा कार्य करने लगता है तो सबसे पहले लोग उस पर हंसते हैं, फिर विरोध करना शुरू कर देते हैं और अन्त में उसके साथ जुड़ जाते हैं। संयम-नियम पर चलने वाला व्यक्ति आलोचना का नकारात्मक प्रभाव अपने ऊपर पड़ने ही नहीं देता। हाँ, यह अवश्य सोचने के लिए मजबूर हो जाता है कि आखिर उसकी आलोचना हुई क्यों? फिर वह अपनी गलती को ढूँढ़ कर सुधारता है और आलोचकों को अपने सबसे बड़े हितैषी मान कर मन ही मन उनका धन्यवाद देता है क्योंकि बिना आलोचना के उसे अपनी गलती का एहसास कैसे होता? स्वयं को बदलने के लिए आलोचक के नजदीक रहना लाभदायक है ताकि हमें अपने अवगुणों का पता चलता रहे और हम अपनी त्रुटियों के प्रति सजग रहें।

दिलाराम को दिल में रखने वाले कभी उदास नहीं हो सकते

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी

सभी की आँखों में कौन समाया हुआ है? मेरा बाबा। हरेक के दिल में दिलाराम है। दिलाराम कह रहे हैं, हे दिलाराम की प्यारी! कैसी हो? ठीक हो! जो भी आपका गृहस्थ है या कारोबार है, उसे चलाने वाला सूक्ष्म में कौन? आपको मदद कौन कर रहा है? मेरा बाबा। मेरा है ना, तभी तो दिल से कहते हैं, मेरा बाबा क्योंकि दिल में समा गया है यानि याद रहती है बाबा की। बाबा की याद से जो भी चाहें वो प्राप्त हो सकता है।

किसको उदासी आ जाती है तो बाबा कम्पैनियन बन करके बहला देते हैं। बाबा को रोना अच्छा नहीं लगता है। बाबा कहते हैं, हँसो, बाहर से ऐसे नहीं हँसो लेकिन दिल में ऐसी खुशी हो जो नस-नस से लगे जैसे हँस रहे हैं क्योंकि हमारे लिये ही तो खुशी है, नहीं तो किसके लिये है? खुशी भी किसमें आना चाहती है, जो हमारे जैसे बाबा के बच्चे बने हैं। तो सभी के अन्दर खुशी तो है ना। खुशी गंवाते तो नहीं कभी, कोई छोटी-मोटी बात आई तो! खुशी तो हमारी चीज़ है ना, बाबा ने खुशी दी है, तो हमारी चीज़ हमारे पास है तो फिर क्या है! देखो बाबा मिलता है तो कितनी खुशी होती है सभी को। होती है ना!

बाबा हैं ही खुशी के दाता। अच्छा, कोई नुकसान भी हो जाता है लेकिन नुकसान को देख करके कोई रोये, बाहर से नहीं लेकिन आँखों में थोड़ा फर्क पड़ जाये, तो भी बाबा कैच कर लेते हैं। बाबा कहते हैं, बाबा का बच्चा और शक्ल क्यों चेंज हुई? बाबा खुशी के सागर हैं और बच्चे मास्टर सागर तो हैं ना! तो उनकी शक्ल हमेशा मुसकराने वाली होनी चाहिए, उन्हें देख रोने वाला भी मुसकराना शुरू कर दे। चलो पुरुषार्थ में कभी-कभी पेपर आते हैं लेकिन हो गया तो और ही हजार गुणा ठीक करेंगे, मुरझायेंगे नहीं। हो गया ना, अभी सभी से आगे जाके दिखायेंगे। तो खुशी हमारी, हमारे साथ है। कहेंगे, वैसे तो खुश रहते हैं लेकिन कभी-कभी, कभी-कभी उदासी क्यों आई? फिर तो आदत पड़ जायेगी, एक बारी आने दिया तो आती रहेगी। ब्रह्माकुमार-ब्रह्माकुमारी माना ही खुशी के संसार में रहने वाले। खुशी की दुनिया के सिवाय और उनके पास कोई दुनिया ही नहीं। बाबा दिल में हैं तो चेहरा हमेशा खुश।

आप अपना खुशी का फोटो निकालके देखो और दिल में कोई बातें हैं तब का फोटो निकालके देखो, तो कितना फर्क दिखाई देता है। ऐसे बाबा फिर कब मिलेंगे? सतयुग भी आ जाए, ऐसे बाबा नहीं मिलेंगे। हम कहते हैं, बाबा ही हमारे सबकुछ हैं, सतयुग में यह नहीं कहेंगे, अभी कहते हैं। अगर यह अनुभव अभी नहीं किया तो समझो सारा ही कल्प गया। खुशी है किसके लिये, हमारे लिये ही तो है। तो सभी खुश हैं? कितना? बाबा कहते हैं, खुश रहो और खुश रह करके खुशी इतनी इकट्ठी करो जो सबको बाँटो।

बिचारे दुनिया के मनुष्य देखो, कोई बात याद आ गई, तो कहेंगे, बहन जी क्या करूँ... बस वही रोना, फिर कथा शुरू हो गई। अभी तो हमारी दुनिया ही बदल गई है। चलो, गलती से कोई बात हो भी गई क्योंकि सम्पूर्ण तो अभी नहीं हुए हैं, तो बात पूरी हुई ना। उसकी याद न रहे, आगे के लिये डायरेक्शन मिला। बाबा कहते हैं, पता नहीं किस समय हॉर्न बजेगा, चलाचली का मेला शुरू हो जायेगा, उस समय क्या करेंगे! उस समय आँसू पोंछने में ही समय चला जायेगा, ऐसा नहीं होना चाहिए इसलिए अभी इतने तैयार हो जाओ जो कैसा भी समय आये लेकिन हम सामना कर

सकें। हमारे बाबा हमारे साथ हैं, जो हजारों को हंसाते हैं, दु:खी को सुखी बनाते हैं, रोते हुए आते और हंसते हुए जाते हैं। हमारा कौन है, बताओ। (दादी भी हैं) वो उनमें आ गई, वो तो बीज इतने बड़े हैं, जो सब उनमें आ जाते हैं। बाबा में सब आ जाते हैं। हरेक का बाबा है ना! बहन जी भी हमारी है लेकिन योग लगाने के लिये बाबा ही है। बहनों में प्यार है और प्यार के कारण ही, जो बाबा शिक्षा देते हैं वो धारण जल्दी हो जाती है। बाबा ने कहा, हमने किया, ऐसे है ना!

भले दु:खी लोगों के बीच में रहते हैं लेकिन हमारे लिये दु:ख नहीं है। रहना तो पड़ता है ना। अपने मन में दु:ख का नामनिशान नहीं है। कभी-कभी दिखाने के लिये भी शान्त रहना पड़ता है लेकिन अन्दर से खुशी नहीं जाये। अन्दर बाबा कभी नहीं भूले, क्या भी बात हो जाये।

कई बड़े चतुर हैं, कहेंगे, माया आ गई ना तो क्या करें! माया को आप खत्म कर दो। अरे, खत्म तुमको करना है या मेरे को करना है? विजयी तो आपको बनना है ना। आपकी तरफ से हम बनेंगे तो आप विजयी थोड़ेही कहलायेंगे इसलिए सदा खुश रहने वाले बनो। ❖

बाबा को अपने पास महसूस किया

ब्रह्माकुमारी नीलिमा महोबिया, महासमुंद (छ.ग.)

एक बार एक पारिवारिक मांगलिक कार्यक्रम में लौकिक सम्बन्धी आए हुए थे, उन्होंने मेरा ध्यान मेरे बढ़ते हुए पेट की तरफ खिंचवाया और डॉक्टर से जांच कराने को कहा। जांच के बाद डॉक्टर ने बताया कि आपकी बच्चादानी में गाँठ है, जो बढ़ रही है, आप सोनोग्राफी कराओ। सोनोग्राफी कराने पर ज्ञात हुआ कि बच्चादानी में 10 × 8 सेन्टीमीटर की गाँठ है जिसका ऑपरेशन कर बच्चादानी निकालनी पड़ेगी। उस दिन से मैं बहुत डरने लगी कि अब क्या होगा। जैसे-जैसे ऑपरेशन के दिन समीप आते जा रहे थे, मेरी घबराहट बढ़ती जा रही थी। रोज अमृतवेले उठ बाबा से बातें करती थी, बाबा मेरा ऑपरेशन आप करना, आप रूहानी सर्जन हैं, मैं आपकी बच्ची हूँ।

निर्भय होकर जाओ

जिस दिन हॉस्पिटल में भर्ती होना था, मैं बाबा से मिलने सेवाकेन्द्र पर गई। बाबा से बातें की तो महसूस हुआ, बाबा कह रहे हैं, डरो मत, निर्भय होकर जाओ, सहन करने की शक्ति को स्मृति में रखो। बाबा से बातें कर जब बाहर निकली तब सेवाकेन्द्र की निमित्त बहन फल और टोली देने बाहर खड़ी थी। टोली लेते समय मुझे उनकी सूरत में मुसकराते हुए ब्रह्मा बाबा दिखाई दिए जो कह रहे थे, घबराने की कोई बात नहीं, तुम ईश्वरीय संतान हो, जब तुम्हारा ऑपरेशन होगा, मैं वहीं रहूँगा और बाबा ने अपना वायदा निभाया।

रहती हूँ अतीन्द्रिय सुख में

ऑपरेशन के दिन अमृतवेले बाबा से फिर बातें की। सुबह 7 बजे मुझे स्ट्रेचर पर लिटा कर ऑपरेशन के लिए ले गये। उस वक्त मैंने बाबा को अपने पास महसूस किया। ऑपरेशन के दौरान मेरी आँखों पर जैसे ही पट्टी बांधी गई, मैंने बापदादा को याद किया, तो अन्तर्चक्षु से क्या देखा, ब्रह्मा बाबा सामने खड़े थे और मुरली सुना रहे थे। ऑपरेशन की समाप्ति तक बाबा ने मुझे मुरली सुनाई और वरदान भी दिये। इसके बाद डॉक्टर ने कहा, नीलिमा, आप ठीक हो, तब मेरा ध्यान भंग हुआ, आँखों की पट्टी खुली हुई थी, दर्द का कोई एहसास नहीं था बल्कि खुशी थी कि बाबा ने मेरा इलाज किया, मुरली सुनाई। मैंने डॉक्टर मैडम को धन्यवाद कहा। यह अनुभव सात सालों में पहली बार हुआ जिसे याद कर अतीन्द्रिय सुख में रहती हूँ। ❖

प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के

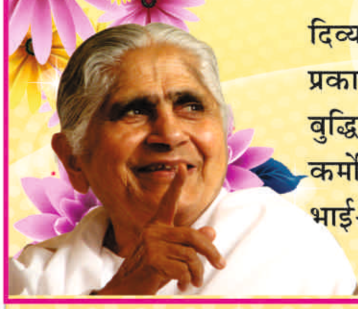

दिव्य बुद्धि के वरदान से विभूषित आदरणीया दादी जानकी जी, हर प्रकार के प्रश्नों के उत्तर देकर आत्मा को संतोष से भर देती हैं। बुद्धिवानों की बुद्धि बाबा ने उन्हें ऐसी कला प्रदान की है कि वे उलझे कर्मों की गुत्थियाँ सुलझाकर समाधानस्वरूप बना देती हैं। प्रस्तुत हैं भाई-बहनों द्वारा पूछे गए प्रश्नों के दादी जानकी द्वारा दिये गये उत्तर

– सम्पादक

प्रश्न:- जीवन को सफल और सार्थक बनाने का मुख्य रहस्य क्या है?

उत्तर:- परमात्मा सर्वशक्तिवान मेरा साथी है। मैं जीते जी ऐसे कर्म करूँ, उसके साथ का लाभ लूँ तो जीना भी बहुत सफल है, सार्थक है। हमें अपना समय, धन, शक्ति व्यर्थ नहीं करने हैं क्योंकि ये कीमती हैं, जीवन भी कीमती है। जब समझ मिली कि जैसा अन्न वैसा मन, जैसा संग वैसा रंग, जैसा पानी वैसी वाणी... तो बहुतों के जीवन में परिवर्तन हुआ। कई हैं जो खान-पान, रहन-सहन में फालतू खर्च करते हैं, औरों को खुश करने के लिये होटल में जायेंगे तो कितना खर्चा होगा! इसकी बजाय 4-5 जन मिलके अपने घर में खाना बनाके प्यार से खायेंगे तो एक्स्ट्रा खर्च बचेगा। इन बातों में धन व्यर्थ नहीं करना चाहिए। व्यक्ति, वस्तु और वैभवों के द्वारा ही पाँचों विकारों की प्रवेशता होती है। अगर एक भी विकार के वश हैं तो जीवन सफल नहीं है। एक-एक विकार की गहराई में जाओ, जैसे काम महाशत्रु है। क्रोध मीठा बनने नहीं देता है, मिल करके प्यार से चलने नहीं देता, ये बातें अच्छी नहीं हैं, अपने को महसूस करना है। फिर लोभ – यह भी हो, वह भी हो...। पहले-पहले मैं स्टूडेंट्स के घरों में जाकर देखती और कहती थी, यह एक्स्ट्रा सामान क्यों रखा है? हमारा कमरा आकर देखो, कितना अच्छा है, आराम से बैठ कर रूहरिहान करने का मन करेगा। इसके लिए मन बड़ा शान्त हो, बुद्धि ज्ञान से भरपूर हो। साइलेंस में बैठने से एकाग्रता की शक्ति अच्छी बढ़ जाती है। अन्तर्मुखता, एकाग्रता की शक्ति अन्दर खुशी पैदा करती है।

प्रश्न:- कई पूछते हैं, जीना है तो कैसे? इसका क्या उत्तर दें?

उत्तर:- जो भी सगे-सम्बन्धी हैं या दूर वाले भी हैं, सबके लिये अच्छी तरह से शुभ चिंतन में रहना, शुभ चिंतक बनकर जीना है। कई बहन-भाई अपने को टाइम नहीं देते हैं। जब कोई इन्वेंशन निकालनी होती है तो साइंसवाले भी पहले शान्ति में एकाग्र होते हैं। हम भी जितना साइलेंस में रहेंगे उतनी स्थिति अच्छी बनेगी और अन्य की भी बनेगी। खान-पान, रहन-सहन में पवित्रता ऐसी हो जो सत्यता काम करे मेरे ऊपर। देखा है, पवित्रता में बहुत बल मिलता है। अपवित्रता और पवित्रता के कॉन्ट्रास्ट को अच्छी तरह से समझना है। फिर धैर्य स्वत: आता है, छोटी-छोटी बातों में जल्दी-जल्दी में कुछ बोल दिया, नहीं, जीवन में धीरज बहुत ज़रूरी है। कई भाई-बहनें हैं जिन्होंने धीरज को अपना कर जीवन को अच्छा बना करके रखा है। नम्रता बहुत मीठा बना देती है। पवित्रता, सत्यता, धैर्य, मधुरता और नम्रता, ये सब विशेषतायें साइलेंस में रहने से ऑटोमेटिक काम करती हैं।

सत्यता में बल है। हेराफेरी करना, मिक्सचर बातें करना अच्छा ही नहीं लगता। मेरा यह काम नहीं है,

भगवान बचाये। सत्यता के आधार से चल रहे हैं ना। हमारे पास अगर कुछ भी नहीं है पर सच्चाई है तो मैं खुश हूँ। ऐसे बहन-भाई बहुत हैं, जिन्होंने सत्यता के आधार से अपनी लाइफ को ऐसा बनाके रखा है, जो घड़ी-घड़ी दिल से कहते, शुक्रिया भगवान तेरा, जो मुझे ऐसी लाइफ दी है। भगवान के साथ सर्व सम्बन्धों की कम्पनी से यह सब सीखी हूँ। बाबा ने जो नॉलेज दी है उसकी गहराई में जाओ तो देखो, सच क्या है? झूठ क्या है? बात यदि रांग है, ठीक नहीं है, कभी नहीं करेंगे। जो राइट है, जरूरी है, तो ज़रूर हिम्मते बच्चे मददे बाप के हिसाब से सच्ची दिल पर साहेब राज़ी है। कोई भी गलत काम मैं तो नहीं करेंगी पर सूक्ष्म ऐसा वायुमण्डल बनायेंगे जो दूसरे भी नहीं कर सकते हैं।

प्रश्न:- सच्चा साथी कौन है, उसके साथ का अनुभव क्या है?

उत्तर:- मैं अपना मित्र आप हूँ, जो कुछ करेंगे अपने लिये करेंगे। दूसरा, भगवान को मित्र बनाके रखा है, बहुत मदद करता है। भगवान हमारा साथी है और साक्षी होकर खेल खेलना है। दो आत्मायें एक जैसी नहीं हो सकती, हरेक में अपनी विशेषता है। हमारी नज़र ऐसी हो, सबकी विशेषता को देखो, वो भी मेरी विशेषता देखेंगे। अगर मैं किसी का अवगुण देखेंगी, तो वो भी मेरे गुण नहीं देख सकेंगे। तो मैं अपना मित्र आप, भगवान मेरा मित्र है, सब मेरे मित्र हैं। दिन में कई बार बाबा के फोटो के सामने बाबा को कहती हूँ, बाबा, अभी मुझे ज्यादा समय इस शरीर में क्यों रखा है? बताओ ना। तो बाबा मुसकराता है, कुछ नहीं कहता है। हमारे पास पूर्वजों का फोटो है ना, तो हंसी में किसी ने कहा, ये (पूर्वज) कहते हैं, हमारे पास तुम्हारे लिए जगह नहीं है इसलिए तुम यहीं रहो। दूसरा, मेरे अन्दर से भी आवाज़ निकला, मेरा बाबा कैसा है, जो मैं बता सकती हूँ वैसे और कोई नहीं बता सकता है इसलिए मुझे रहना है इस शरीर में, जब तक सारी दुनिया देखे कि मेरा बाबा कैसा है। भले वो कहते हैं, हमारे पास जगह नहीं है। अच्छा है, तुम अपना काम करो, मैं अपना काम करूँ। वे सतयुग की स्थापना में अच्छा काम कर रहे हैं और मुझे सारी दुनिया से दु:ख, अशान्ति चली जाये, सुख, शान्ति आ जाये, इसके लिये बाबा ने बिठा दिया है। तो बाबा मुसकराता है, कुछ नहीं कहता है। फिर वन्डर तो यह है, जब सेवा शुरू होती है, शरीर को ठीक कर देता है। बाबा अच्छी तरह से प्यार से सेवा करा लेता है। उस समय शक्ति भर देता है।

मम्मा के शरीर छोड़ने के बाद एक दिन मैं मम्मा की खटिया पर बैठ कर योग कर रही थी, अचानक साकार बाबा दरवाजा खोलके आया और दृष्टि दी। मैं उठने लगी तो कहा कि नहीं, तुम बैठी रहो। फिर अपने कमरे में लेके गया, साथ में खाना खिलाया। फिर कहा कि चलो क्लास में बताता हूँ, योग क्या चीज़ है? वहाँ पूछा, कभी किसी बात में दु:ख तो नहीं फील करती हो? न दु:ख देती हूँ, न लेती हूँ, मैंने ऐसा बाबा को बोला। वह दिन, आज का दिन, न दु:ख देना, न लेना। दुआयें भी मांगी नहीं जाती हैं पर दुआयें अपने आप, जितना हमारा कर्म अच्छा होगा, जमा होती जायेंगी। मैं समझती हूँ, यह बात सबको जँचती है ना, कुछ भी हो जाये फिर भी न दु:ख दो, न लो।

प्रश्न:- अपने अन्दर क्या-क्या चेकिंग करनी है?

उत्तर:- योगी के साथ नष्टोमोहा भी हैं, चेक करो कहाँ भी ज़रा-सा मोह तो नहीं है? कोई आसक्ति तो नहीं है? आसक्ति माना कोई इच्छा तो मेरे पास नहीं है। मैं कहती हूँ, सफेद कपड़े जेब खाली, हम हैं सारे मुल्क के वाली। यह है लाइफ, इसके लिए अनासक्त वृत्ति को धारण करना पड़ता है। मेरे पास कुछ नहीं, इसमें बहुत मज़ा है, हाथ खाली हैं। कल का देखा जायेगा, कल का आज नहीं सोचना है। हिम्मते बच्चे मददे बाप। सच्ची दिल पर साहेब राज़ी। नियत साफ तो मुराद हासिल, जो संकल्प है सो पूरा होता है। ❖

गुप्त शक्ति मुझे चला रही है

ब्रह्माकुमारी मंजू बाघवानी, पूना (वनवाडी)

मार्च, 2014 में मेरा माउन्ट आबू जाना हुआ। वहाँ ब्रह्माकुमारीज़ मुख्यालय का अवलोकन किया और सेवकों से निवेदन किया कि हमें राजयोग सिखाइये। एक बार तो उन्होंने हमें कहा कि स्थानीय सेवाकेन्द्र पर जाकर सीखिए पर हमने बहुत उत्सुकता दिखाई तो उन्होंने सिखाना शुरू किया। उनका अपनापन इतना ज्यादा था, लगता था, हमारा यहाँ से पुराना रिश्ता है। लौटकर हम पूना के ब्रह्माकुमारी केन्द्र पर नियमित जाने लगे।

युगल के विकार छूट गए

मेरे युगल मांसाहारी थे। होली, दीवाली भी नहीं छोड़ते थे। ड्रग्स तथा तम्बाकू भी लेते थे। उन्होंने ब्रह्माकुमारी बहन के कहने से पवित्रता को धारण करने के लिए दो दिनों में ही सब छोड़ दिया। वे हमेशा गुस्से में रहते थे लेकिन अब शांत रहने लग गए हैं। हर बात को लंबा खींचने की आदत थी, वो छूट गई है। अब हर बात को फुलस्टॉप लग जाता है। वे कभी भी सुबह जल्दी नहीं उठते थे, 10 बजे उठते थे और फिर से सो जाते थे। आज वे अमृतवेले सुबह 4 बजे उठते हैं और 6.30 बजे मुरली सुनने रोज सेवाकेन्द्र पर जाते हैं। उनका इतना बड़ा परिवर्तन देखकर महसूस होता है कि यह पिता परमात्मा की शक्ति के बगैर नहीं हो सकता।

मन पर हुआ कन्ट्रोल

मैं 25 साल से गुरुभक्ति में थी, पूर्ण गुरमुखता में रहती थी पर अपने संस्कारों और विकारों को कम नहीं कर पाई थी। गुस्सा तो मेरे नाक पर रहता था। कोई ने कुछ कह दिया तो रोती रहती थी। बदले की भावना नहीं रहती थी, माफी जल्दी दे देती थी पर मन फिर भी बहुत उदास रहता था। अब गुस्सा करने से पहले हर बार सोचती हूँ और गुस्सा जल्दी समाप्त कर देती हूँ। कोई कुछ बोलता है तो बुद्धि कहती है, यह आत्मा है, मैंने इसे जो दिया था वो वापिस दे रही है। इससे मन बहुत जल्दी कन्ट्रोल में आ जाता है।

परिस्थिति में भी शान्ति

मेरी आदत है सबको मदद करना। एक सखी को मैंने बड़ी रकम उधार दी। आज वह कुछ भी वापिस नहीं कर रही है। मैंने दूसरों से उधार लेकर उसे रुपये दिये थे। अब ब्याज मैं चुक्ता कर रही हूँ पर मन बहुत परेशान नहीं करता है। यही मन को समझाती हूँ कि शायद मैंने उससे ऐसा ही किया होगा, आज वह वापस लेने आई है। शिव बाबा से शक्ति लेती हूँ और शान्ति में रहती हूँ। इतना ही नहीं, मन और बुद्धि से उस आत्मा से माफी माँग उसे शांति, सुख और शक्ति के वायब्रेशन भेजती हूँ। वह हर जगह झूठ बोलती है, झगड़ा करती है, गालियाँ भी देती है, चिल्लाती है फिर भी मन शांति से सहन करने को बोलता है। पूरी ज़िंदगी की कमाई उसे दे दी, शायद मुझसे सहन नहीं होता, मैं पागल हो जाती, कुछ गलत भी कर देती पर फिर भी मैं शान्ति से बैठी हूँ। ये बाबा की शक्ति का कमाल है। एक गुप्त शक्ति है जो मेरे साथ चल रही है और मुझे चला रही है।

खुद को समझती हूँ भाग्यशाली

मेरे युगल भी यही कहते हैं कि तनाव में मत आओ। धन आना होगा तो आयेगा, बाबा मिला है यह बहुत बड़ी दौलत है जो नाशवान दौलत से बढ़कर है। सच कहती हूँ, अमृतवेले तीन बजे उठती हूँ और बाबा की दुनिया में मस्त रहती हूँ। बीमार आत्माओं को हीलिंग भेजती हूँ। शिव बाबा की कृपा से वे हॉस्पिटल से बाहर आती हैं तो खुद को

बहुत भाग्यशाली आत्मा समझती हूँ। प्रकृति को रोज़ दिल से पॉजिटिव वायब्रेशन देती हूँ। डिप्रेशन और बीमार आत्माओं को शक्ति की किरणें भेजती हूँ। मैं एक विशेष कार्य के लिए पैदा हुई हूँ, ऐसा लगता है। मैं कल्याणकारी हूँ और महान हूँ, जिन्दगी लाइट-माइट से भरपूर लग रही है। मैं परमात्मा के कार्य में सहयोगी बन रही हूँ, यह कितनी श्रेष्ठ बात है। यह समझकर उत्साह आता है कि मैं सबसे बहुत अलग हूँ और सर्वशक्तियों, सर्वगुणों से सम्पन्न हो रही हूँ जिससे हर कार्य में सहज ही सहायता मिलती है। वाह, मेरे मीठे बाबा, वाह। ❖

जंगली मक्खियों से बचाया बाबा ने

ब्रह्माकुमार रामलाल राना, मलोडन, सुजानपुर टिहरा (हि.प्र.)

मैंने और मेरी युगल ने सन् 2003-2004 में कोलाबा (मुम्बई) सेवाकेन्द्र पर ईश्वरीय ज्ञान सीखा और धारण किया। जुलाई, 2005 में हम पैतृक राज्य हिमाचल प्रदेश में आ गये और तब से नजदीकी सेवाकेन्द्र पर नियमित ईश्वरीय ज्ञान का लाभ ले रहे हैं। परमपिता परमात्मा शिव बाबा अपने बच्चों की प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से अवश्य रक्षा करते हैं। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है कि 09-10-2015 को हमारे पड़ोस में श्राद्ध का अनुष्ठान था। उस समय मेरे मन में आभास होना शुरू हो गया कि आज जल्दी ही दोपहर का खाना खाकर घर से कहीं बाहर चले जायें। इसी आभास के अनुसार मैंने और मेरी युगल ने समय से एक घण्टा पहले भोजन कर लिया। भैंस और उसके बच्चे को अन्दर पशुशाला में बाँध दिया और दूर अपने खेत में चले गए।

हमारे आँगन के साथ ही गाँव का रास्ता और आम का वृक्ष है। इसी वृक्ष की ऊँची वाली टहनी पर जंगली विषैली मक्खियों (मधुमक्खी से बड़ी) का छत्ता था जिसमें हजारों की संख्या में मक्खियाँ थीं। इनके द्वारा किसी मनुष्य या पशु को काटे जाने पर यदि उचित चिकित्सा समय पर न हो तो मरने की शत-प्रतिशत आशंका रहती है। मक्खियों के अधिक वजन के कारण आम के वृक्ष की वह टहनी टूट गई और छत्ता नीचे रास्ते में गिरकर फट गया। हजारों की संख्या में मक्खियों ने पड़ोस में खाना ले रहे 3 पुरुषों और 3 महिलाओं पर हमला कर दिया। वे घर के अन्दर भागे तो बहुत सारी मक्खियाँ भी उनके साथ अन्दर घुस गई। अनगिनत डंक मार-मार उन सबको बुरी तरह घायल कर दिया। उन्हें हॉस्पिटल ले जाया गया जहाँ दो सप्ताह उनका इलाज चलता रहा। इसके अतिरिक्त कइयों को मक्खियाँ 3-4 दिनों तक काटती रहीं और रास्ता 5 दिनों तक बन्द रहा।

हमारा घर, आँगन और पशुशाला घटनास्थल से बहुत नजदीक हैं लेकिन मक्खियों ने वहाँ प्रवेश तक नहीं किया। जैसे कोई दिव्य शक्ति उन्हें अन्दर आने से रोक रही थी। इस तरह परमपिता परमात्मा ने हमारी और पशुओं की रक्षा की। शिवबाबा आपको कोटि-कोटि धन्यवाद। उन बहनों और भाइयों का भी शुक्रिया जिन्होंने हमें शिव बाबा का ज्ञान बताया, उसकी धारणा करवाई और परमात्म-मत पर चलते रहने में सहयोग दिया। ❖

संविधान के पूर्व का विश्व का इतिहास

(पश्चिमी दुनिया के हिसाब से)

ब्रह्माकुमार रमेश, मुंबई (गामदेवी)

भारत तथा विश्व में शुरू से ही अधिकतर स्थानों पर राजाओं का ही राज्य चलता था। उस परंपरा में पहली बार इंग्लैण्ड में परिवर्तन हुआ। 9 फरवरी 1649 के दिन इंग्लैण्ड में लोकतंत्र की स्थापना हुई जब ऑलिवर क्रॉमवेल (Oliver Cromwell) ने इंग्लैण्ड तथा स्कॉटलैण्ड का कारोबार उस समय के ब्रिटेन के राजा चार्ल्स द फर्स्ट (Charles-I) से छीनकर खुद राष्ट्रपति (Lord Protector) बनकर कारोबार अपने हाथ में लिया। उस समय के ब्रिटेन के राजा चार्ल्स द फर्स्ट के द्वारा समाज पर बहुत अत्याचार किये गये और उसके विरुद्ध में ऑलिवर क्रॉमवेल ने राजा की सेना को पराजित कर अपनी सेना के द्वारा राज्य शुरू किया और फिर उन्होंने चार्ल्स द फर्स्ट को गद्दी से बेदखल कर दिया। परंतु लोकतंत्र की स्थापना के बाद और सत्ता प्राप्त होने के बाद अच्छी रीति से राज्य करने की बजाय ऑलिवर क्रॉमवेल को सत्ता का लोभ हुआ जिस कारण उसने जो संसद बनाई थी उसे खुद ही 1658 में भंग कर दिया और ब्रिटेन का सरमुख्तार बन गया। बाद में उसने भी लोगों पर अत्याचार करने शुरू किये। 3 सितम्बर, 1658 के दिन उसकी मृत्यु हुई। उसकी जगह पर उसका बेटा सरमुख्तार के रूप में राज्य करने लगा। परंतु वह इतना काबिल नहीं था जिससे आंतरिक कलह के कारण 8 महीने में ही उसे निकाल दिया गया और इस प्रकार फिर से इंग्लैण्ड में चार्ल्स द फर्स्ट की राजाशाही शुरू हो गई। यहां पर एक बात विश्व के इतिहास में देखने को मिलती है कि इंग्लैण्ड में राजाशाही कभी भी पूर्णतया खत्म नहीं हुई। फिर से बीज से वृक्ष बन वह राजाशाही प्रस्थापित हुई है और इसी कारण ब्रिटेन में क्रांति हुई क्योंकि वहां पर राजवंश के बीज पड़े हुए थे।

परंतु उसके बाद जब फ्रांस में क्रांति हुई तब क्रांतिकारों ने चुन-चुन कर राजा और उसके वंशज, रिश्तेदारों आदि की हत्या कर दी ताकि इंग्लैण्ड में जैसे पुन: राजाशाही आई वह फ्रांस में ना आने पाये। इसी प्रकार रशिया के राजा ज़ार (Czar) के विरुद्ध क्रांति हुई और लेनिन आदि द्वारा ज़ार, राजपरिवार के सभी सदस्यों एवं उसके मित्र रासपुतिन आदि को हटाकर लोकतंत्र की स्थापना हुई। इस प्रकार पश्चिमी दुनिया का इतिहास बना।

परंतु इंग्लैण्ड में राजाशाही होते हुए भी संसद द्वारा कार्य शुरू रहा। आज भी कहावत है कि इस दुनिया में 5 राजायें सदा काल रहेंगे जिनमें 4 राजायें ताश के पत्तों के और पाँचवा राजा इंग्लैण्ड का। इंग्लैण्ड का पहला प्रधानमंत्री Sir Robert Walpole रहा, उसे लोकतंत्र का प्रस्थापक कहा जाता है। लोकतंत्र के अनुसार इंग्लैण्ड का कारोबार तो शुरू हुआ, संसद भी बनी परंतु संविधान नहीं बना। इंग्लैण्ड में संसद जो निर्णय लेती थी वही संविधान का रूप बन जाता था अर्थात् वही कानून बन जाता था। न्यायपालिका में उसे ही कानून के रूप में मानकर निर्णय लिये जाते थे। संसद के अधिकारों पर कोई प्रतिबंध नहीं रहा, इस प्रकार इंग्लैण्ड में राजाशाही नाममात्र रही और संसद उससे ऊपर रही। एक जगह लिखा हुआ है कि संसद कोई कानून पास करे कि राजा को फांसी दी जाये तो भी राजा को उस पर हस्ताक्षर करने पड़ते हैं और उसे फाँसी पर चढ़ना पड़ेगा। वैसे ही वहां पर King Edward-VIII ने तलाकशुदा Wallis Simpson से शादी करने का निर्णय किया तो संसद ने कहा कि यह राजाशाही के ऊपर कलंक है इसलिए King Edward-VIII को राजाई का त्याग करना पड़ा और वह फ्रांस में जाकर रहने

लगा। उसके स्थान पर उसके भाई Albert ने George VI के रूप में राजगद्दी संभाली और उसके निधन के बाद उनकी सुपुत्री Queen Elizabeth-II ने राजगद्दी सम्भाली जो अभी भी इंग्लैण्ड की महारानी के रूप में कार्य कर रही हैं। इंग्लैण्ड के राज्यकारोबार की एक विचित्र विधि है कि महारानी एलिजाबेथ द्वितीय महारानी हैं परंतु उनका पति राजकुमार फिलिप वहां का महाराजा नहीं है। महारानी विक्टोरिया के समय पर भी ऐसा ही हुआ था कि वह महारानी थी परंतु उनका पति महाराजा नहीं था।

इंग्लैण्ड की राजाशाही के बारे में हमने बचपन में एक कहानी पढ़ी थी कि James-I, जो पहले स्कॉटलैण्ड के राजाई परिवार का था, को इंग्लैण्ड का राजा नियुक्त किया गया। एक बार वह अपने घोड़े पर स्कॉटलैण्ड जा रहा था तो रास्ते में उसे बहुत प्यास लगी। वह वहां के गन्ने के खेत में गया और एक ग्लास गन्ने का रस मांगा। खेत के मालिक ने राजा से पूछा कि आप मुझे क्या समझते हो तो राजा ने कहा कि आप एक किसान हो। फिर उसने कहा कि मैं इससे बड़ा हूँ तो आप मुझे क्या समझते हो तो राजा ने कहा कि आप खेत के मालिक हो। ऐसे पूछते-पूछते फिर खेत के मालिक ने राजा को अपना परिचय दिया कि वह एक जमींदार है। फिर राजा ने भी उससे उसी प्रकार पूछा कि आपको मालूम है कि मैं कौन हूँ? आप मुझे क्या समझते हो? जमींदार ने जवाब दिया कि आप एक सिपाही लगते हो। फिर राजा ने उसे कहा कि मैं इससे बड़ा हूँ। इस प्रकार पूछते-बताते अंत में जमींदार ने राजा से कहा कि आप सरसेनापति हो तो राजा ने कहा, नहीं, मैं इससे बड़ा हूँ। तब जमींदार समझ गया कि सरसेनापति से ऊपर तो राजा ही होता है। फिर जमींदार ने राजा से अपने व्यवहार के लिए तुरंत माफी मांग ली। राजा ने उसे कहा कि जैसे अभी आपको मालूम पड़ा कि मैं राजा हूँ तो आप मेरे सामने इतने नम्र बनकर रहे और मेरी सेवा की वैसे ही आप अपने सेवकों के साथ भी ऐसे ही नम्र रहो। उन्हें भी राजा समझकर उनके साथ नम्रतापूर्ण एवं सम्मानजनक व्यवहार करना।

वास्तव में यह कहानी, भारत में जो परमात्मा सर्वव्यापी कहा गया, उसके संबंध में लागू होती है। भारत में यही सिखाया गया कि हर मनुष्य आत्मा को इतना महान समझो जैसे कि वह परमात्मा का अंश है और उसके साथ प्रेमपूर्ण, सम्मानजनक व्यवहार करो परंतु समय बीतता गया और इस बात की वास्तविकता बदल गई और लोगों ने सभी मनुष्यों में परमात्मा है, ऐसा समझा और परमात्मा को सर्वव्यापी कहा गया।

इंग्लैण्ड का संविधान बहुत ही लचीला (flexible) है। जो-जो निर्णय संसद पास करती है वही अंतिम रूप से कानून बनता है। यह कानून House of Lords एवं House of Commons - इन दोनों सदनों द्वारा पारित होता है और उसे ही सर्वश्रेष्ठ माना जाता है और वही फिर संविधान के रूप में स्थापित हो जाता है अर्थात् विश्व के अन्य संविधानों की भेंट में इंग्लैण्ड का संविधान बहुत ही लचीला है, अन्य देशों के संविधान में परिवर्तन करने में काफी जड़ता है। इंग्लैण्ड की राजाशाही और लोकतंत्र के बारे में अनेक रोचक किस्से हैं जैसे कि विलियम पिट जूनियर 24 वर्ष की आयु में इंग्लैण्ड के सबसे कम उम्र के प्रधानमंत्री बने। ऐसे ही द्वितीय विश्वयुद्ध की शुरूआत में इंग्लैण्ड के प्रधानमंत्री चेंबरलिन ने विदेश मंत्री विंस्टन चर्चिल (जो बाद में इंग्लैण्ड के प्रधानमंत्री बने) को 2-3 बार रशिया भेजा। बाद में उन्होंने ऐसा वायुमण्डल बनाया कि हिटलर अगर इंग्लैण्ड पर वार करता तो रशिया पीछे से इंग्लैण्ड को मदद करता परंतु हिटलर ने इंग्लैण्ड से युद्ध करने की बजाय सीधे ही रशिया से युद्ध किया जबकि रशिया युद्ध करना ही नहीं चाहता था और यही हिटलर की सबसे बड़ी भूल हुई। इतिहासकार कहते हैं कि अगर हिटलर रशिया की बजाय इंग्लैण्ड से युद्ध करता तो विश्व का इतिहास कुछ और होता।

ऐसे ही एक बहुत बडी भूल नेपोलियन बोनापार्ट ने की। वॉटर्लू के युद्ध के समय नेपोलियन के सामने इंग्लैण्ड व

उसके मित्र राष्ट्रों की सेनायें थी। तब नेपोलियन ने समझा कि ऑस्ट्रिया की सेना अब तक इंग्लैण्ड में शामिल नहीं हुई है इसलिए नेपोलियन ने अपनी सेना का तीसरा हिस्सा पूर्व यूरोप की ओर भेज दिया, जबकि तब तक ऑस्ट्रिया की सेना इंग्लैण्ड की सेना में शामिल हो चुकी थी। परिणामरूप इस युद्ध में नेपोलियन हार गया और फिर वह पकड़ा गया और उसे कैद कर दिया गया। अगर नेपोलियन भी ऐसी गलती नहीं करता तो इतिहास कुछ और होता।

परंतु आज के समय में इंग्लैण्ड के सिवाय बाकी यूरोपीय देशों का एक राष्ट्र समुदाय बन गया है जिसे यूरोपीय आर्थिक परिषद् (European Economic Council) कहा जाता है। ये सभी देश आपस में मिलजुलकर काम करते हैं। यह भी एक विचित्र बात है कि एक समय के कट्टर दुश्मन आज साथी बनकर कार्य करते हैं। इसका अर्थ यह है कि राजनीति में कोई किसी का सदाकाल के लिए ना ही दुश्मन होता और ना ही दोस्त होता है। समय के साथ परिस्थिति बदलती है इस कारण कभी साथी दुश्मन बनते हैं और कभी दुश्मन साथी बनते हैं। एक बहुत विचित्र परंतु सत्य बात है जैसे द्वितीय विश्व युद्ध में रशिया के करोड़ों लोग जर्मनी द्वारा मारे गये परंतु आज जर्मनी और रशिया दोनों साथ-साथ हैं और जर्मनी ने रशिया में बहुत निवेश किया है अर्थात् रशिया की वर्तमान आर्थिक उन्नति में जर्मनी का बहुत बड़ा योगदान है। यूरोपीय आर्थिक परिषद् के ज़रिये ये सभी राष्ट्र एक-दूसरे को आर्थिक रूप से मदद करते हैं। परिणामस्वरूप इटली और ग्रीस जैसे देशों को अपने खर्चे के लिए इन देशों से सहायता लेनी पड़ती है। इन सभी देशों ने अपनी मुद्रा (currency) भी एक ही रखी है। उसका नाम है यूरो डॉलर। इंग्लैण्ड इस परिषद् का अंशत: सदस्य है। इंग्लैण्ड में पाउण्ड का चलन है जबकि फ्रान्स, जर्मनी आदि की मुद्रा एक ही है। परंतु इन सभी देशों का अपना-अपना संविधान है और उसी प्रकार से इनका कार्य चलता है। अगले लेख में भारत के संविधान की पूर्व भूमिका के बारे में लिखूंगा। ❖

बाबा ने की धन की रक्षा

ब्रह्माकुमार मदन, बालोतरा (राजस्थान)

घटना 08-06-2015 की है। हमें परिवार सहित घर बन्द करके 7 दिन के लिए बाहर जाना था। बाबा ने एक महीना पहले ही इशारा दे दिया था कि बाहर जाओ तो घर में कुछ भी कीमती सामान नहीं रखना है, अपने सम्बन्धी के पास या बैंक लॉकर में रख कर जाना, सिर्फ बाहर का ताला लगा देना। सब चाबियाँ अन्दर ही रख कर जाना, कुछ भी बन्द नहीं करना है। हमने बाबा (भगवान) के इशारे अनुसार ऐसा ही किया। अन्दर सब खुला रख कर, बाहर ताला लगा कर हम 06-06-2015 को भीलवाड़ा के लिए निकल गये। कीमती सामान सब सुरक्षित रख दिया। फिर 08-06-2015 को सुबह बालोतरा से समाचार आया कि घर के ताले टूट गये, घर में चोर घुस गये। पड़ोसियों को लगा कि बहुत सामान गया होगा पर हम बेफिक्र बादशाह की तरह रहे, कोई चिन्ता नहीं हुई क्योंकि चोरों ने सब ढूँढ़ा, कुछ भी हाथ नहीं लगा। दरवाजों को ताले नहीं थे इसलिए वे भी खराब नहीं हुए, नहीं तो उनका हुलिया ही बिगाड़ देते। हमारे घर में जगह-जगह बाबा के चित्र लगे हुए हैं।

चोर बिना कुछ लिए निकल गये। कपड़ों और सामान को भी हाथ नहीं लगाया। लेपटॉप व सी.डी.को भी नहीं छुआ। बाबा ने तो कमाल कर दिया। हम परिवार सहित 12-06-2015 को बालोतरा आये, देखा, कुछ भी सामान नहीं गया। बाबा ने इस प्रकार धन की रक्षा की। अगर इशारा नहीं मिलता तो कम-से-कम 7-8 लाख पर तो चोर चूना लगा ही देते। बाबा, आपका लाख-लाख शुक्रिया। हमारी पूँजी बचा ली। ❖

तनाव और हमारी प्रतिक्रिया

ब्रह्माकुमारी शिवानी बहन, गुड़गाँव

कई लोग सोचते हैं कि थोड़ा-सा गुस्सा, थोड़ी-सी चिंता का होना स्वाभाविक है लेकिन आपने कभी ये कहा कि थोड़ा-सा बीमार होना स्वाभाविक है? नहीं। 'सम्पूर्ण स्वास्थ्य स्वाभाविक है', ये लक्ष्य लेकर शरीर का ध्यान रखते हैं तो वो ठीक रहता है। कभी-कभी थोड़ा-सा ऊपर-नीचे हो भी जाता है लेकिन थोड़े-से बीमार पड़ते ही हम सोचते हैं कि जल्दी से जांच कराएँ और इसे ठीक करें।

जब तनाव में होते हैं तो थोड़ा-सा सिर में दर्द, थोड़ा-सा पेट में दर्द ये स्वाभाविक लगता है लेकिन वास्तव में सिरदर्द स्वाभाविक नहीं है। इसको हमने स्वीकार कर लिया है, हम स्वीकार भी क्यों करते हैं? यह हमें समझना होगा। हमने इलाज के लिए प्रयास किया पर कोई इलाज पता नहीं चला। चिकित्सक ने कहा, एम.आर.आई. आदि सभी परीक्षण हो गये, पर कहीं भी, कुछ भी नहीं निकला। तब हम कहते हैं कि यह स्वाभाविक है क्योंकि हमें उसका इलाज नहीं मिला। इलाज हमारे सोचने के ढंग में है और वहाँ हम मेहनत करना नहीं चाहते क्योंकि हमें पता ही नहीं है कि यह मेहनत कैसे करनी है?

तनाव का सह-उत्पाद है सिरदर्द या अल्सर, उसका शारीरिक स्तर पर कोई इलाज नहीं है। उसका एक ही इलाज है, अपने सोचने के ढंग को बदल दो। पर हम तो मानते हैं कि दर्द वाली सोच आना स्वाभाविक है। फिर यह दर्द मेरे संबंधों में भी दिखाई देने लगता है। मैं शारीरिक, भावनात्मक दर्द में हूँ तो संबंध-सम्पर्क में आने वाले लोगों को क्या दूँगी! जो मेरे पास है वही दूँगी ना। फिर संबंधों में थोड़ा-थोड़ा टकराव, स्वभाव-संस्कार की थोड़ी-थोड़ी भिन्नता होने लगती है जिसके कारण हम एक-दूसरे से दूर-दूर रहने लगते हैं। फिर उसको भी कहना शुरू कर दिया कि ये तो स्वाभाविक है। स्वाभाविक ... स्वाभाविक ... कहते-कहते हमने इतनी सारी अस्वाभाविक चीज़ों को स्वाभाविक बना दिया।

थोड़ा तनाव स्वाभाविक है, यह कहने पर थोड़े की परिभाषा कौन निर्धारित करेगा? मान लो, आज तनाव 10 प्रतिशत है लेकिन कल बहुत बड़ा आर्थिक संकट आ जाए, घर पर कुछ हो जाये, व्यापार बंद हो जाये, प्राकृतिक आपदा आ जाये, अन्य परिस्थिति आ जाए तो तनाव का स्तर तुरंत आगे बढ़ेगा। तब क्या हम अपने तनाव पर नियंत्रण कर पायेंगे कि उसे थोड़ा ही रखना है, बढ़ाना नहीं है। ऐसे में हमें थोड़े तनाव को भी स्वाभाविक नहीं मानना है बल्कि उससे मुक्त होना सीखना है, तभी बड़ी बात भी हमें प्रभावित नहीं करेगी।

कई लोग छोटी-छोटी बातों में बहुत परेशान हो जाते हैं परन्तु बड़ी बात आने पर सुरक्षित रहते हैं, यह किस प्रकार का व्यक्तित्व है? जब बड़ी परिस्थिति आती है तो ऐसे लोगों को अपनी ज़िम्मेवारी का एहसास होता है। यह ज़रूरी नहीं है कि उनके अन्दर दबाव का अनुभव नहीं है लेकिन उनका लक्ष्य बहुत स्पष्ट है कि इस परिस्थिति को पार करना है। वो ज़िम्मेवारी लेते हैं कि परिवार को, पूरी कम्पनी को, सबको साथ लेकर चलना है। ऐसे समय पर वो दबाव को अंदर दबा लेते हैं और परिस्थिति को पार कर लेते हैं लेकिन इसके बाद, कई बार, वे बुरी तरह से टूट जाते हैं क्योंकि अंदर तो पूरा दर्द भरा हुआ है, वो निकला नहीं है, वो उन्हें सुख से जीने नहीं देता है। वो अंदर ही अंदर घुटते रहते हैं इसलिए हम बात कर रहे हैं कि दुख

अंदर निर्मित ही न हो। हम पहले कोशिश करें कि हमें स्थिरता से छोटी-छोटी परिस्थितियों को पार करना है। फिर बड़ी परिस्थिति में ज्यादा मेहनत नहीं करनी पड़ेगी।

रोज़ सुबह उठकर अपने संकल्प की नाड़ी को जाँचो कि मन में कैसे विचार चल रहे हैं, उनकी चाल कैसी है? ऐसे तो नहीं कि बहुत तेज़ चल रहे हैं। जब हृदय की गति बढ़ जाती है तो हम तुरंत कहते हैं कि कुछ बीमारी है लेकिन हृदय की गति तेज क्यों हुई? बीते हुए समय के और बहुत नकारात्मक कोटि के विचार मन में चल रहे हैं, जिनकी वजह से हृदय गति तेज़ हुई है। जब मन का बोझ शरीर को प्रभावित कर देता है तब हमें लगता है कि अब इलाज करवाना ज़रूरी है लेकिन अगर उसको उसी स्तर पर ठीक कर दिया होता तो वो शारीरिक स्तर पर आता ही नहीं।

किस परिस्थिति में हमें किस प्रकार सोचना है या किस प्रकार व्यवहार करना है, ये हमारे वश में है। यही एक चीज़ मेरे वश में है और कुछ भी मेरे वश में नहीं है लेकिन उसी को मैंने सोचा कि यही मेरे हाथ में नहीं है जिसके फलस्वरूप सब कुछ मेरे नियंत्रण से बाहर चला गया। आप यही कहेंगे कि मेरी सास, परीक्षा, पाठ्यक्रम ये मेरे हाथ में नहीं हैं लेकिन इनको जवाब कैसे देना है, ये तो हाथ में है।

श्रद्धांजलि

साकार मम्मा-बाबा की पालना में पली, यज्ञ स्नेही, यज्ञ माता, देश-विदेश में रहते हुए बापदादा के दिल में सदा समायी हुई मीठी चन्द्रा बहन (पुष्पा बहन) वासवानी जो कि दादी चन्द्रमणि जी की बड़ी बहन की बेटी थी, आपका बहुत बड़ा परिवार विश्व के कई देशों में यज्ञ स्नेही, सहयोगी बन अपना तन-मन-धन सफल कर रहा है। आप कई स्थानों पर सेवाकेन्द्र खुलवाने के निमित्त बनीं। 14 फरवरी, 2016 को अचानक आपकी तबीयत बिगड़ी, उसी समय पूना के हॉस्पिटल में भर्ती किया गया। लंदन की जयन्ती बहन तथा लौकिक परिवार की उपस्थिति में 16 फरवरी, 2016 को आप अपना पुराना शरीर छोड़ बापदादा की गोद में समा गई। आपकी शारीरिक आयु 88 वर्ष थी। ऐसी स्नेही, आदि रत्न, महान आत्मा को पूरा दैवी परिवार बहुत स्नेह से श्रद्धा सुमन अर्पित करता है।

एकता का महत्व

झाडू, जब तक एक सूत्र में बँधी होती है, तब तक वह कचरा साफ करती है। लेकिन वही झाडू जब बिखर जाती है तो खुद कचरा हो जाती है।

घुटनों व कूल्हों की प्रत्यारोपण सर्जरी नियमित हर महीने के अंतिम सप्ताह में की जाती है।

सर्जरी यू.के., ऑस्ट्रेलिया और जर्मनी से प्रशिक्षित, मुम्बई के कुशल एवं अनुभवी सर्जन डॉ. नारायण खण्डेलवाल द्वारा की जाती है। अग्रिम चेकअप तथा सर्जरी की तारीख जानने के इच्छुक मरीज संपर्क करें:

डॉ. मुरलीधर शर्मा, ग्लोबल हॉस्पिटल, माउंट आबू, राजस्थान। मोबाइल: 09413240131

फोन: (02974) 238347/48/49 वेबसाइट: www.ghrc-abu.com

फैक्स: (02974) 238570 ई-मेल: drmurlidharsharma@gmail.com

मानसिक विकलांगता से बचें

ब्रह्माकुमारी उर्मिला, संयुक्त संपादिका

आज के समय में बहुत लोग आत्मा का अनुभव करना चाहते हैं। आत्मा को अनुभव करने का सरलतम तरीका है कि हम अपने भीतर निरन्तर उठने वाले विचारों को अनुभव करें, जानें, समझें और परखें। विचार मन में उत्पन्न होते हैं और मन आत्मा की ही एक शक्ति है अत: अपने विचारों के करीब पहुँचना ही आत्मा के करीब पहुँचना है। बाहरी जगत से ध्यान हटाकर, भीतर के जगत की ओर ध्यान एकाग्र करके हम देखें कि विचारों में क्या चल रहा है? क्या हम ऐसा कर सकते हैं? कई बार हम बच्चों को कहते हैं, बेटा पढ़ लो, होमवर्क कर लो लेकिन अन्दर विचार आ रहा होता है, 'इसने मेरा कहना मानना तो है नहीं, कभी नहीं मानता, पढ़ेगा नहीं।' यह जो हम सोच रहे हैं, यह उसके पास पहले पहुँचता है और जो कह रहे हैं, बेटा, बैठकर पढ़ लो, यह वाणी बाद में पहुँचती है। क्या हम बोलने से पहले अनुभव कर रहे हैं कि मैं वाणी तो सकारात्मक बोल रहा हूँ पर विचार तो नकारात्मक है। हम उसे सन्देश दे रहे हैं कि तुम कभी नहीं पढ़ोगे और उसे ना पढ़ने का बल मिल रहा है। वाणी में ताकत तब आएगी जब विचार भी वाणी से मेल खाता होगा। इसी को कहते हैं सोचने और बोलने में समानता। इसके लिए बोलने से पहले अपने विचार को परखना है और दिशा देनी है। अगर विचार गलत है तो बुद्धि की शक्ति से विचार को ठीक करना पड़ेगा।

ना उत्तेजना आई, ना क्रोध

एक बार एक शहर में नए-नए खुले मेडिकल कॉलेज में हमें भाषण के लिए बुलाया गया। उन्होंने समय दिया था प्रात: 11.00 बजे का। हम पाँच बहनें ठीक 10.30 पर पहुँच गई यह सोचकर कि औपचारिकताएँ पूरी करते-करते ठीक 11.00 बजे प्रवचन शुरू हो जाए लेकिन 11.00 तो उन्होंने हमारा परिचय लेने में बजा दिए। फिर 11.00 से 11.45 तक वे सभागार की तैयारी में लगे रहे। जब 11.45 पर सभागार में ले गए तो देखा माइक सेट नहीं हुआ था, फिर उसे सेट करने की कोशिश करते रहे, तब तक 12.00 बज गए। वह सेट नहीं हुआ तो कहने लगे, आप बिना माइक के ही बोलिए। मैंने 12.45 तक बच्चों को आध्यात्मिक अनुभूतियाँ कराईं। प्रवचन पूरा होने पर डीन की सहयोगी बहन ने हमारा आभार व्यक्त किया और कहा, आप लोगों का एक-डेढ़ घन्टा हमने बरबाद करवा दिया, आपको 12.00 बजे बोलने को कहा, वह भी बिना माइक के तो भी आप खुशी-खुशी बोल लिए। आप बहनों के चेहरे पर ना उत्तेजना आई, ना क्रोध, आप बस मुसकराते रहे।

विचार-शक्ति ही हमारी अपनी दौलत है

उसकी बात सुनकर भी हम पाँचों बहनें मुसकराती रहीं पर मैंने मन में कहा, 'आप हमारा समय तो ज्यादा ले सकते हैं पर हमारी शान्ति ना ले सकते, ना डिस्टर्ब कर (बिगाड़) सकते क्योंकि उस पर हमारा पूरा कन्ट्रोल है, वो हमारी अपनी चीज है। इन्तजार की घड़ियों में भी हम अपने विचारों पर काम करते रहे, उन्हें सम्भाले रहे, उन्हें सशक्त, सकारात्मक, सुखदाई बनाके मुसकराते रहे और हल्के रहे। हमारी विचार शक्ति ही हमारी अपनी दौलत है। कॉलेज आपका है, व्यवस्था आपकी है, साधन आपके हैं पर विचार तो हमारे हैं। आपका कुछ ऊपर-नीचे है तो इसके कारण हम अपने विचारों को ऊपर-नीचे क्यों करें? जितनी देर बैठे हैं, उतनी देर शान्ति, प्रेम, धैर्य के प्रकम्पन तो फैला ही सकते हैं।' फिर प्रकट रूप में कहा, 'मैडम, आपका बहुत-बहुत शुक्रिया, किसी कारण से देर हुई पर आपने विचार व्यक्त करने का मौका तो दिया, अगर किसी

कारण से यह मौका ना भी मिलता तो भी हम बिना शिकायत के खुशी-खुशी लौट जाते क्योंकि उस स्थिति में आपने हमारा कुछ छीना तो नहीं होता, हमारी चीज़ हमारे पास ही रहती, हम किसी और को दे देते।'

व्यवहार का तुरन्त प्रभाव

हमारी सबसे बड़ी ताकत हमारे विचार हैं, वो हर हाल में सकारात्मक रहने चाहिएँ। हमने भाषण द्वारा जो सिखाया वह तो बाद की बात है परन्तु व्यवहार का उन पर तुरन्त प्रभाव पड़ा कि ये लोग बड़े शान्त, धैर्यवान, स्नेही, गुणग्राही और सकारात्मक हैं। इससे हमारा रिश्ता उनके साथ और ज्यादा मजबूत हो गया। उन्होंने कहा, आपके यहाँ जब भी कोई विशेष वक्ता आए, सबसे पहले हमारे कॉलेज में प्रवचन के लिए लेकर आना। अगर हम थोड़े झुंझला पड़ते तो शायद वो इतने दिल से दुबारा आने का निमन्त्रण ना दे पाते, भले ही व्यवस्था में थोड़ा ढीलापन उनका था।

आवश्यक है वैचारिक बल भी

यह उदाहरण इसलिए दिया कि हम सबको घर में, कार्यालय में या अन्यत्र भी रिश्ते बनाकर रखने होते हैं और थोड़ी भूल-चूक तो सबसे हो जाती है। अगर हम अपने विचारों को सम्भालकर रखना जानते हैं तो छोटी या बड़ी बात आने पर या बिना बात भी किसी से भी रिश्ते नहीं बिगाड़ेंगे। रिश्ते नहीं बिगाड़ेंगे तो उन लोगों से फायदे मिलते रहेंगे। भले ही हमारा पद, धन, कौशल अधिक हो पर रिश्तों में सुमधुरता न होने से हम कई फायदों से वंचित रह जाते हैं। वैचारिक बल भी उतना ही आवश्यक है जितनी बाहरी योग्यताएँ आवश्यक हैं। दोनों के सन्तुलन से हमारा जीवन सम्पूर्ण बनेगा।

इसके लिए हम बार-बार भीतर जाएँ और देखें, मैं क्या सोच रहा हूँ? अपने से बातें करें, क्या मेरा यह सोचना ठीक है? मान लीजिए, पास वाले ऑफिस के किसी अधिकारी-कर्मचारी से हमें सहयोग की ज़रूरत पड़ी, हमने सहयोग मांगा पर उसने नहीं दिया। अब हम इस बात को पकड़कर बैठ जाते हैं, यह व्यक्ति सहयोग दे सकता था (यह हमारा भ्रम भी हो सकता है कि वह दे सकता था, 'ना' करने की उसकी कोई मजबूरी भी हो सकती है), मुझे कितनी जरूरत थी! पर इसने सहयोग नहीं दिया।

घटनाएँ घटीं और काल-चक्र के साथ चलती बनीं

बात को पकड़े रहना बहुत खतरनाक है। देखिए, व्यक्ति के साथ कई अनचाही शारीरिक क्रियाएँ होती रहती हैं जैसे अचानक छींक आना, खाँसी आना, हिचकियाँ आना आदि। कोई भी व्यक्ति इन क्रियाओं को पकड़ कर नहीं बैठता कि मुझे चार बजे छींक आई, पाँच बजे खाँसी आई, छह बजे हिचकी आई। ये शारीरिक क्रियाएँ रूपी घटनाएँ घटीं और काल-चक्र के साथ चलती बनीं परन्तु हम उस बात को पकड़ कर बैठ गए कि उसने मुझे सहयोग नहीं दिया। जब-जब वह सामने आएगा, उसकी चर्चा चलेगी या उसका ऑफिस दिखेगा, यह पकड़ी हुई बात मन को घेर कर बैठ जाएगी कि उसने सहयोग नहीं दिया। फिर हमने इस बात का इन्तज़ार किया कि कब ऐसा मौका आए जब जरूरत के समय इसे भी (मेरे से या अन्य से) सहयोग ना मिले, तब मज़ा आएगा।

प्रयोग नहीं कर पाते साधनों और अधिकारों का

हमारी 50 प्रतिशत मानसिक शक्ति उस व्यक्ति के प्रति सोचने में लग गई, अब बची हुई 50 प्रतिशत मानसिक शक्ति से हम क्या-क्या कर लेंगे? अगर हम छींक या खांसी को भी पकड़ कर बैठते तो 50 प्रतिशत शारीरिक शक्ति भी तो बन्धन में आ जाती। हम सोचते, मैं चलूँ कैसे, छींक आ रही है, मुझे खांसी आ रही है। अरे, यह आई थी और आकर चली गई, अब तो आप आराम से चल सकते हो। इसी प्रकार किसी ने सहयोग नहीं दिया, यह घटना घटी थी, काल के उदर में समा गई, आप उसे पकड़ कर क्यों बैठे हो? पकड़ने से आपका कितना नुकसान हो रहा है। मान लीजिए, अगले कुछ पलों में एक और इसी प्रकार की घटना घट गई, फिर हमने उसको भी पकड़ लिया, अब

हमारी मानसिक शक्ति 25 प्रतिशत रह गई। परिणाम यह निकलता है कि ज्ञान, साधन, शक्ति, अधिकार होते भी मानसिक शक्ति के विकलांग या पैरालाइज्ड होने के कारण हम भीतर से उत्साहित नहीं हो पाते, दूसरों को भी उत्साहित नहीं कर पाते और अपने साधन तथा अधिकारों को भी पूरी शक्ति के साथ प्रयोग नहीं कर पाते। आज के संसार में शारीरिक विकलांगता कुछ प्रतिशत लोगों में है परन्तु मानसिक विकलांगता तो अधिकतर में है।

भीतर की टूटन से बचाता है राजयोग

राजयोग हमारी इस आन्तरिक विकलांगता को खत्म करता है। हमें भीतर की टूटन से बचाता है, हमें भीतर से सशक्त करता है। इसके लिए हमें जानना है कि शरीर के भीतर रहने वाली मैं एक ज्योतिबिन्दु आत्मा हूँ और परमपिता परमात्मा भी ज्योति के एक अति सूक्ष्म बिन्दु हैं, जो सर्वशक्तिवान हैं और इस सूर्य से भी पार अर्थात् पाँचों तत्वों से पार ब्रह्मलोक के वासी हैं। हम अपने मन को उन परे ते परे रहने वाले परमात्मा से जोड़कर उनकी सम्पूर्ण शक्तियों को अपने में भर सकते हैं। सौर ऊर्जा का फार्मूला भी इसी प्रकार का है। हम जानते हैं कि सूर्य की किरणें सारे भूमण्डल पर बिखरी रहती हैं पर वे एक तिनके को भी नहीं जला पाती परन्तु जब पैराबोलिक प्लेट तथा रिसीवर के ज़रिए उन्हें एकत्रित कर लिया जाता है तो वे 500 डिग्री तक भी गर्मी पैदा करती हैं। इसी प्रकार यह मन, जो बिखरा पड़ा है – उसने मुझे यह कहा, वह कहा – इन बातों से उसे मुक्त करें और सर्वोच्च सत्ता पर एकाग्र करें तो उनकी सारी शक्तियाँ मन में समाने लगती हैं और हम अपने को इतना सशक्त महसूस करते हैं कि अब कुछ भी असम्भव नहीं है।

ईश्वरीय शक्ति से मन सहित इन्द्रियों पर पूर्ण नियन्त्रण हो जाता है। हम मन को एक कमाण्ड (विचार) देते हैं, ठीक तीन बजे उठना है और ठीक उसी समय आँखें खुल जाती हैं। अपने को कमाण्ड देते हैं, एक घण्टे में ये बिखरे कार्य समेटने हैं और उतने समय में सचमुच समेटे जाते हैं। संकल्प की कमाण्ड से अपनी इन्द्रियों को जीतते हैं और जब यह कमाण्ड दूसरी आत्माओं को भेजी जाती है तो वे भी हमारे सहयोगी बन जाते हैं। इस ईश्वरीय बल के आधार से स्वयं का, दूसरों का और फिर इस सम्पूर्ण भौतिक जगत का कायाकल्प हो जाता है अर्थात् यह सुख-शान्ति-सम्पन्नता से भरपूर स्वर्णिम संसार बन जाता है। ❖

दिल में बसने वाले, ओ बाबा

ब्रह्माकुमार अशोक उपाध्याय, आबू पर्वत

मेरे दिल में बसने वाले ओ बाबा, तेरे गुण गाऊँ मैं,
तुझको पाकर सब कुछ पाया, तेरी यादों में खो जाऊँ मैं।।
मेरे दिल में बसने वाले.......

अब तो दिल का यही तराना,
जन-जन को तेरा प्यार लुटाना।
सबकी आत्म-ज्योति जगाना,
फिर से सुखद सवेरा लाना।।
तेरी याद की शक्ति से, तुझसा ही बन जाऊँ मैं,
मेरे दिल में बसने वाले.........।

पिता तुम्हीं और माता तुम हो,
शिक्षक, सद्गतिदाता तुम हो।
वरदानों के दाता तुम हो,
सबके भाग्यविधाता तुम हो।।
तेरी मुरली की धुन से सबके मन हर्षाऊँ मैं,
मेरे दिल में बसने वाले.......।

जब तक तन में प्राण रहेंगे,
श्रीमत पर तेरी चलते रहेंगे।
दिल में अब कब गम न होगा,
प्यार तेरा कब कम न होगा।।
तेरी मीठी-मीठी यादों में मन ही मन मुसकाऊँ मैं,
मेरे दिल में बसने वाले...................।

सब बोझ दे दो बाबा को

ब्रह्माकुमार जगदीश, भादरा (राजस्थान)

मैं पिछले 15 वर्षों से ईश्वरीय ज्ञान में चल रहा हूँ। मेरी युगल आश्रम से जुड़ी हुई हैं, उनके कहने से मैं भी आश्रम जाने लगा। सृष्टि-चक्र के आदि, मध्य, अन्त का ज्ञान समझ कर, पाचों विकारों से छुटकारा पाने के बाद मैं सुख, शान्ति, आनंद, उमंग, खुशी से पार्ट बजाता हुआ याद की यात्रा में आगे बढ़ता जा रहा हूँ और अपने आपको बहुत भाग्यशाली मान रहा हूँ कि संगमयुग पर मुझे प्यारे बाबा का हार्दिक प्यार मिला है।

बाबा की शरण में आकर
स्वस्थ हो गया बिना दवा के

बाबा के राजयोग और ज्ञान को जानने से पहले मैं बहुत ही तमोप्रधान था, मानसिक रोग और दौरे के भयंकर रोग से ग्रसित था। लगभग 30 साल तक काफी इलाज करवाया परन्तु कोई लाभ नहीं हुआ। दर्द करते हुए शरीर के साथ चल रहा था। मेरी मानसिक हालत पागल जैसी हो गई थी और अपने से हताश हो गया था। बाबा की शरण में आने के बाद मेरा इलाज एक साल में हो गया। मैं बिना दवा के स्वस्थ हो गया। सिर्फ बाबा की दुआ से यह सब हुआ इसलिए बहुत खुशी अनुभव कर रहा हूँ। बाबा का बार-बार रोज़ाना शुक्रिया करता रहता हूँ। हर साल बाबा से मिलन मनाने मधुबन जाता हूँ, सेवा भी करता हूँ। बाबा से रूहानी प्यार, वरदान, उमंग, उत्साह सब प्राप्त कर खुशी में झूमने लगता हूँ। मैं सोचता हूँ कि इससे बड़ा भाग्य और क्या होगा, जो स्वयं भगवान मिल गए हैं।

बाबा के स्लोगन और चित्र ने कर दिया हल्का

कुछ माह पहले आँख में तकलीफ हुई, मुझे आँखों से असंख्य काले दाने दिखाई देने लगे। डॉक्टर को दिखाया, दवा ली परन्तु विशेष लाभ न होने के कारण उसने बड़े अस्पताल (हिसार) में दिखाने के लिए बोला। उन्हीं दिनों आश्रम में योगभट्ठी का कार्यक्रम रखा हुआ था। मैं योगभट्ठी में शामिल होना चाहता था परन्तु आँख का इलाज कराने जाना भी ज़रूरी लग रहा था। अकेला जाना नहीं चाहता था इसलिए एक भाई को साथ चलने के लिए कहा। उन्होंने कहा कि 10-15 दिन बाद चलेंगे, अच्छी तरह तुम्हारा इलाज करा देंगे। मेरे मन में दुविधा उत्पन्न हुई कि क्या करें, अकेले जाएँ या बाद में जाएँ। न जाऊँ तो आँख के ज्यादा खराब होने का डर, जाऊँ तो योगभट्ठी के कार्यक्रम के मिस होने का डर। तभी अचानक बाबा का एक स्लोगन और चित्र सामने आया जिसे देखकर मैं हल्का हो गया।

बाबा की दिव्य दृष्टि ने किया कमाल,
मैं आनंद से हुआ निहाल

स्लोगन में लिखा था, 'यदि तुम भगवान को याद करोगे तो वह तुम्हारा ध्यान रखेगा।' बाबा का एक चित्र देखा जिसमें बाबा कह रहे हैं, 'बच्चे, तुम चिंता मत करो, मैं बैठा हूँ।' यह पढ़ कर निश्चिंत हो गया कि ज़रूर बाबा ही समस्या का समाधान करेंगे। अपना सारा भार बाबा को दे कर योगभट्ठी के कार्यक्रम में सच्ची लगन से योग करता रहा। मुझे निश्चय था कि पहले भी बाबा ने ठीक किया था, यह भी बाबा ही ठीक करेंगे। योगभट्ठी के पहले दिन बाबा की रूहानी दृष्टि अपनी आँख पर डाली। थोड़ी देर में अनुभव होने लगा कि बाबा रूहानी सर्जन बन कर आँख साफ कर रहे हैं। योग के बाद पाया कि आँख कुछ ठीक हुई है। रोजाना यही क्रम चालू रहा। योगभट्ठी का कार्यक्रम पूरा हुआ और आँख भी पूरी तरह से बाबा ने ठीक कर दी। यह

चमत्कार देख खुशी का ठिकाना नहीं रहा। बाबा को बार-बार शुक्रिया करता हूँ। बाबा की दिव्य दृष्टि ने किया कमाल, मैं आनन्द से हुआ निहाल। वाह बाबा वाह! सेवाकेन्द्र की दीदियों की शिक्षा व सेवाकेन्द्र के भाई-बहनों की शुभभावना शुभकामना से ही यह सब हुआ है। सबका पूरा सहयोग मुझे प्राप्त है।

मेरे प्यारे भाई-बहनो, मैं यह शुभ सन्देश देना चाहता हूँ कि कोई समस्या, दुख हो तो बाबा को सच्ची लगन से अपना बोझ दे दो, सब ठीक हो जायेगा। अब देर ना करो, सेवाकेन्द्र पर आकर बाबा से आध्यात्मिक ज्ञान, बिना खर्च सीखो और अपना भविष्य सुधार कर देवता बनो। ❖

रहमदिल बाबा बच्चों की पुकार सुनता है

ब्रह्माकुमार सोमैय्या, मीरपेट, सिकंदराबाद, तेलंगाना राज्य

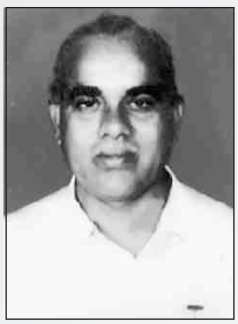

मेरा अलौकिक जन्म सन् 1984 में हुआ। घर में गीता पाठशाला चलाता हूँ। युगल (पत्नी), बच्चों सहित सभी सहयोगी हैं। बात अगस्त, 2014 की है। हमारे गाँव में पानी की बहुत कमी चल रही थी। किसान भाइयों के मन में अशांति और निराशा बैठ गयी। पाँच किसान भाइयों ने बाबा को पहचान लिया, वे राजयोग की पढ़ाई पढ़ने रोज़ाना शाम के समय आने लगे। गाँव के अन्य भाई लोगों ने हनुमान मंदिर में पानी की समस्या को लेकर भजन-कीर्तन का कार्यक्रम आयोजित किया। बाबा के पास आने वाले किसान भाई भी भजन मंडली में शामिल हो गये। हनुमान मंदिर में लगातार इक्कीस दिन भजन-कीर्तन का कार्यक्रम चला। फिर भी बारिश का नामोनिशान दिखाई नहीं दिया। किसानों को दुख और अशांति बढ़ते गए, यह समाचार हम तक पहुँच गया। गाँव के बाहर एक पुराना शिवजी का मंदिर है। मैं और एक कुमार (एक बालक) हर सोमवार को मंदिर में जाकर शिव के भक्तों को शिव पिता परमात्मा का सही परिचय देने की सेवा करते हैं।

एक अमृतवेले आँख खुलते ही बापदादा को शुभ प्रभात (Good Morning) कहने के बाद ''मीठे बाबा, प्यारे बाबा, पानी चाहिए, गाँव में आपके सभी बच्चे तड़प रहे हैं, मेरे बाबा, बरसात गिराओ'' यह गुहार लगाई। दो दिन बाद सोमवार के दिन, शिवालय में जाकर, जो भी आया, शिव पिता का परिचय उसको सुनाया। उसके बाद बापदादा की याद में वहीं बैठ गया। अंदर ही अंदर (मन में) मीठे बाबा को कह कर यह प्रतिज्ञा कर ली कि ''कल से भोजन नहीं करूँगा, आपकी याद में लगातार दिन-रात बैठा रहूँगा, कुछ भी हो जाये, बरसात गिरने तक प्रतिज्ञा नहीं तोड़ूँगा''

गाँव में सभी को बताया कि कल रात से सभी को मिलकर शिव पिता की याद में बैठना है। गाँव में ज्यादातर माताओं ने दिन-रात शिव पिता की याद में बैठने का उमंग, उत्साह प्रकट किया। अगले दिन मंगलवार रात को शिव मंदिर में शामियाना, कुर्सियाँ, बत्तियाँ आदि का प्रबंध करने में लग गए।

वतन से रहमदिल बाबा ने बच्चों का उमंग, उत्साह देख लिया और मंगलवार को दोपहर के समय ही बाबा ने बहुत भारी बरसात कराई। दया के सागर बाबा आपको कोटि-कोटि धन्यवाद, धन्यवाद स्वीकार कीजिए। ❖

गतांक से आगे ...

मानव जीवन में धन की उपयोगिता

ब्रह्माकुमार नरेश, मुजफ्फरनगर

धनी या गरीब कहलाने के लिए धन की मात्रा तय नहीं है। कोई 10-12 लाख रुपये होने पर अपने को धनी मानने लगता है और कोई 10-12 करोड़ रुपये होने पर भी अपने को धनी नहीं समझता। रोम में एक धनाढ्य व्यक्ति रहता था। उसे व्यापार में घाटा होने लगा। एक दिन उसने पाया कि उसके पास मात्र दस लाख यूरो ही बचे हैं। उसने परिजनों से कहा कि अब कल मेरा काम कैसे चलेगा और आत्महत्या कर ली। इसके विपरीत यदि घोर दरिद्रता से दुखी परन्तु कर्म करने को प्रेरित युवक को कहीं से लाख, दो लाख रुपये मिल जाते हैं तो वह उमंग-उत्साह से अपने भविष्य को संवारने में लग जाता है। इस प्रकार धन की सीमा पर व्यक्ति का दृष्टिकोण व सोच हावी रहती है। धन, कर्म का सम्मान करता है। उसे निठल्ले का संग करना पसंद नहीं। कर्मशील मनुष्य वर्तमान की अपनी तुच्छ पूंजी से हतोत्साही नहीं होता। इसके विपरीत अधिक पुश्तैनी सम्पदा का मालिक कर्म के प्रति निरुत्साही रहता है। हैदराबाद के एक निजाम ने चालाकी व छल से भारी मात्रा में धन इसलिए इकट्ठा किया कि उसके परिवार वाले आराम से रह सकें। निजाम के गुजरने के कुछ ही वर्षों बाद परिवार फुटपाथ पर था क्योंकि निजाम ने उन्हें धन व्यय करना तो सिखाया परन्तु कमाने की योग्यता नहीं दी। उसी प्रकार अन्तिम मुगल बादशाह बहादुरशाह जफर का परिवार भी जफर के गुजरने के बाद कोलकाता की तंग गलियों में तंगहाली में रहता पाया गया।

जड़ प्रतिमाएँ भी करती हैं पालना

गरीबों व भिखारियों की आवश्यकताएँ पूरी होती रहती हैं परन्तु धनी व्यक्तियों की धन की लालसा कभी पूरी नहीं होती। गरीब केवल आज की आवश्यकता देखता है जबकि धनी व्यक्ति कई पीढ़ियों की। एक भक्त मन्दिर के बाहर बैठे भिखारी को पैसे फेंक कर देता है और मन्दिर में प्रतिमाओं के चरणों पर भी दूर से पैसे फेंकता है परन्तु इन दोनों फेंकने की क्रियाओं में मनोभाव विपरीत होते हैं। भिखारी के प्रति वह दाता का दंभ रखता है, तो देवप्रतिमाओं के सामने वह खुद भिखारी की तरह दीनता से याचना करता रहता है। देवप्रतिमा को पैसे देने से मन्दिर के पुजारी को पैसे मिल जाते हैं और उसका गुज़ारा हो जाता है अर्थात् देवी-देवताओं की जड़ प्रतिमाएं भी पुजारी की पालना करती हैं। भक्त देवप्रतिमा के सामने दण्डवत् हो कर श्रद्धापूर्वक झुक जाता है अर्थात् मन्दिर के बाहर अभिमान है तो मन्दिर के अंदर श्रद्धा-भाव परन्तु होना चाहिए समर्पण-भाव। श्रद्धा रखने वाला भक्त तन, मन व धन, तीनों का मालिक खुद बना रहता है जबकि समर्पण सम्पूर्ण रूप से होता है और व्यक्ति ट्रस्टी हो कर तन, मन व धन को ईश्वरीय मत के अनुसार संभालता है। अभिमान, श्रद्धा व समर्पण, इन तीनों क्रियाओं में फर्क है और तीनों से अंकुरित फल अलग-अलग आकार के होते हैं जैसेकि भूमि पर यूं ही बीज फेंक देने, भूमि को तैयार करके उसमें बीज डालने या भूमि को तैयार कर उसमें खाद-पानी के साथ बीज की बुआई करने से, इन तीन प्रकार की क्रियाओं से पौधों की बढ़त में फर्क आ जाता है।

शिवलिंग पर दूध, बच्चा कुपोषित

भक्ति में धन का फिजूल खर्च किसी से छिपा नहीं है। एक विधवा मां अपने बच्चे को पालने के लिए संघर्ष कर रही थी। उसमें भक्ति भावना कूट-कूट कर भरी थी। वह

माँ बड़ी मुश्किल से आधा लीटर दूध खरीद पाती थी परन्तु इसका आधा हिस्सा शिवलिंग पर रोज़ाना अर्पित करती थी जबकि उसका बच्चा कुपोषण का शिकार हो कर बीमार रहता था। जितना दूध भारतवर्ष के शिव मन्दिरों में और प्रसाद गंगा में रोज़ चढ़ाया जाता है, उसे यदि इकट्ठा कर गरीबों में वितरित कर दिया जाये तो कुपोषण की आधी समस्या दूर हो सकती है। यह देखने में आता है कि मन्दिरों के पास की दुकानों से मिठाई खरीद कर प्रसाद के रूप में इष्टदेव पर चढ़ाई जाती है और इसे परिवार में बीमार व्यक्ति को भी खाने को दिया जाता है। इससे कई बार बीमार व्यक्ति दूषित प्रसाद से और भी बीमार पड़ जाता है और इलाज पर ज्यादा धन खर्च होता है। गुजरात के रूपाल गांव में महानवमी पर माता के ऊपर घी चढ़ाने का रिवाज है। वर्ष 2014 में करीब 11 लाख भक्तों ने 5.5 लाख किलो घी चढ़ाया जिसकी कीमत करीब 16 करोड़ रुपये आंकी गई है। इतनी रकम से तो अनेक गरीबों की तंगहाली दूर की जा सकती थी। गंगा घाट के तीर्थस्थलों पर भक्त पूजा के बाद गंगा में प्रसाद, पैसा व फूल चढ़ाते हैं जिससे जल दूषित होता है। जो खाद्य सामग्री व पैसा ज़रूरतमंदों के काम आ सकता था, उसे पानी में डुबो दिया जाता है। स्पष्ट है कि भक्तों ने अपनी लुटिया खुद ही डुबो रखी है। अब सरकार अरबों रुपये खर्च कर गंगा को स्वच्छ करने का प्रयास कर रही है। यह विडंबना ही है कि ज्ञान-धन से वंचित भक्त स्थूल-धन व सूक्ष्म-भाग्य, दोनों गंवाते हैं।

भक्त और ब्रह्मावत्स

देखा जाए तो सभी प्रकार के धन में ज्ञान-धन सर्वश्रेष्ठ है। इसका नित्य श्रवण करना दूध पीने के समान है। दूध से मिठाई बनती है परन्तु ताकत दूध में होती है, मिठाई में नहीं। आज भक्ति में प्रसाद के रूप में मिठाई चढ़ाने व खाने का रिवाज है जिससे भक्तों का न तो आध्यात्मिक स्वास्थ्य ठीक होता है और न शारीरिक स्वास्थ्य। हाँ, भक्त शिवलिंग पर दूध चढ़ाते हैं परन्तु पानी मिला हुआ और उस दूध को प्रसाद के रूप में ग्रहण नहीं करते। भक्त मावे की मिठाई (प्रसाद) तो खाना चाहते हैं, पानी मिला दूध नहीं पीना चाहते। भक्त बड़े युक्तिबाज हैं जो उन्होंने अपने लिये 'चरणामृत' या 'पंचामृत' के रूप में स्वादिष्ट पेय का प्रसाद बनाया हुआ है जबकि इष्टदेव को पानी मिला दूध चढ़ाते हैं। परन्तु भक्त इसकी एवज में भगवान से घी-मक्खन जैसी प्राप्ति चाहते हैं। लेकिन जिस भक्त को यह समझ में आ जाता है कि स्वयं परमपिता परमात्मा शिव इस समय ज्ञान-मुरली बजा रहे हैं जिससे लाखों भाग्यशाली मनुष्य मक्खन या घी जैसी प्रालब्ध बना कर आगामी 21 जन्मों का भाग्य बना रहे हैं, वो भक्त सब कुछ छोड़ कर ज्ञान-धन की कमाई करने में लग पड़ता है। फिर वो भक्त नहीं रह जाता बल्कि ब्रह्मावत्स बन जाता है। भक्त अर्थात् नियमानुसार, समयानुसार आसन (छोटी दरी) पर बैठ सालों-साल भक्ति करते रहना, चाहे उन्नति हो या न हो। ब्रह्मावत्स अर्थात् ईश्वरीय आसन्न (निकटता) का अनुभव करते हुए आत्मिक उन्नति करना।

धन द्वारा सेवा करने वाले कभी धन के भिखारी नहीं बनेंगे

ब्रह्मावत्स की यह विशेषता है कि वह ज्ञान, गुण व शक्तियों का भण्डार पाता है लुटाने के लिए। वह धन का भी संचय नहीं करता और अतिरिक्त धन को दूसरों के कल्याण हेतु लगा कर अपना भाग्य बनाता है। ब्रह्मामुख से शिवबाबा ने स्पष्ट किया है (अव्यक्त मुरली दिनांक 18.02.1985) कि ऐसे धन द्वारा सेवा के निमित्त बनने वाले 21 जन्म राज्य भाग्य पायेंगे, साथ-साथ द्वापर से अब तक भी ऐसी आत्मा कभी धन की भिखारी नहीं बनेगी। 63 जन्मों में किसी जन्म में भी धन के भिखारी नहीं बनेंगे। मज़े से दाल-रोटी खाने वाले होंगे। मनुष्य बीमा कराते हैं एक जीवन का परन्तु शिवबाबा तो 63 जन्मों का बीमा कर रहे हैं। यह अद्भुत बात है कि इस अन्तिम समय में जो व्यक्ति अपना धन

ईश्वरीय कार्य में सफल करता है उसका धन बीज बन कर 84 जन्मों तक फैल जाता है। धन की एक जन्म की गति, 21 जन्मों की जीवनमुक्ति प्रदान करती है परन्तु ये बातें उनको ही समझ में आ पाती हैं जिनकी बुद्धि स्थूल धन से मुक्त हो परन्तु धन की मिठास ऐसी तीखी है कि बिना आध्यात्मिक समझ के इससे किनारा करना मुश्किल है। मधुमक्खी शहद इकट्ठा करती है परन्तु शहद की चिपचिपाहट से स्वयं को मुक्त रखती है। जब शहद खाती भी है तो किनारे बैठ कर ज़रूरत भर का अन्यथा बीच में गई तो मर जायेगी परन्तु मनुष्य तो धन रूपी शहद में लोभ की चिपचिपाहट से फंस पड़ते हैं। मधुमक्खी अपने शहद से मनुष्यों की सेवा कर रही है परन्तु मनुष्यों का शहद (धन) या तो पीढ़ी-दर-पीढ़ी वारिसों को ट्रान्सफर होता रहता है या नालायक पुत्रों द्वारा उड़ा दिया जाता है। धन की गति पर अंकुश लगाना या इसे निरंकुश हो कर बर्बाद करना ईश्वर की अन्य रचनाओं पर ज्यादती करना है।

चौंकाने वाला तथ्य

कहा जाता है कि धन की आसक्ति सबसे तीखी है परन्तु मेरेपन का मोह भी बड़ा तीखा होता है, जो धन की पारिवारिक-दिशा को जग-कल्याण की दिशा दे नहीं पाता। आज हर बड़े शहर में वृद्धाश्रम हैं। वहां लाचार बुजुर्ग अपनी ही नालायक औलाद के कारण निर्वासित जीवन मजबूरी में जीते हैं। आश्रम के सेवाधारी उनकी इतनी सेवा करते हैं कि उनके सारे मानसिक जख्म सूख जाते हैं और वे सेवाधारियों को अपनी औलाद से भी बढ़ कर पाते हैं। परन्तु जब किसी बुजुर्ग का निधन होता है और उसके सामान को सहेजा जाता है, तो अक्सर वसीयत के कागज़ भी मिलते हैं जिनमें बची-खुची सम्पत्ति उन नालायक औलादों के नाम मिलती है जिन्होंने अपने माता-पिता को वृद्धाश्रम जाने को मजबूर कर दिया था। ये वृद्ध यदि किसी सेवाधारी या वृद्धाश्रम के नाम वसीयत करें या कुछ हिस्सा नाम कर दें तो पुण्य का खाता साथ ले कर जायें परन्तु नालायक औलाद से भी मोह का विकार बड़ा प्रबल है। एक बार एक समाजसेवी संस्था ने उपरोक्त बात का 3 वृद्धाश्रमों में सर्वेक्षण किया और यह चौंकाने वाला तथ्य सामने आया कि पिछले पांच साल में जितने भी वसीयत वाले वृद्धों का निधन हुआ था, सभी ने वसीयत अपने परिवार वालों के नाम ही की थी।

धन से जुड़ी तीन मुख्य बुराइयाँ

जो मनुष्य धन का संचय करता है और धन का व्यय भी उतना ही करता है, उसे इन दोनों क्रियाओं का सुख प्राप्त होता है जबकि जो केवल संचय करता है, धन की सुरक्षा की चिन्ता उसे सुख का अनुभव करने नहीं देती। संसार में धन से जुड़ी तीन मुख्य बुराइयां या बीमारियां हैं (1) अपने धन से मोह की बीमारी, (2) धन को बढ़ाने हेतु परेशान रहने की बीमारी और (3) पड़ोसी के पास ज्यादा धन देख कर ईर्ष्या की बीमारी। मनुष्य विनाशी धन को तो प्यार व याद करता रहता है परन्तु अविनाशी आत्माओं को प्यार व परमात्मा को याद नहीं करता। संसार में स्थूल धन को जो दर्जा प्राप्त है वह दर्जा तो परमात्मा को भी प्राप्त नहीं है। यदि परमात्मा से सुख-शान्ति की मांग की जाती है, तो ज़ाहिर तौर पर सुख-शान्ति का आधार धन प्राप्ति से माना जाता है परन्तु ऐसा है नहीं। अपने समय के धनाढ्य व प्रसिद्ध दार्शनिक डेल कारनेगी ने एक बार कहा था, ''यदि एक जैसे कर्म या व्यवसाय करने वाले दो व्यक्ति एक समान धन से सम्पन्न हों, दोनों एक ही स्थान पर कार्यरत हों, दोनों को समाज का मान-सम्मान भी एक जैसा मिलता हो, फिर भी अपने भिन्न-भिन्न मानसिक रूझान के कारण एक दु:खी व दूसरा सुखी हो सकता है।''

(क्रमश:)

एक पत्र, प्रिय आत्मिक भाइयों के नाम

ब्रह्माकुमार स्वामीनाथन, नेरुल (मुम्बई)

प्रिय आत्मिक भाइयो,

मैं गहराई से महसूस करता हूँ कि हम सभी आत्मा रूपी भाई मूल स्वरूप में परमधाम घर में मीठे शिव बाबा की छत्रछाया में सम्पूर्ण और सम्पन्न अवस्था में निश्चिंत बैठे थे। पार्ट बजाते-बजाते संगमयुग पर फिर से मिल रहे हैं, आपसे मिलने की बेहद खुशी है। आपका रूहानी भाई होने के नाते आपके प्रति शुद्ध और शुभ भावना सदा बनी रहती है। वही शुभभावना इस पत्र के माध्यम से आपके सम्मुख व्यक्त करना चाहता हूँ। सच्चे दिल से चाहता हूँ कि आप और हम अंतिम जन्म में सम्पूर्ण पावन और सम्पन्न बनने का तीव्र पुरुषार्थ कर शिव बाबा के कार्य में अच्छे सहयोगी बनें।

अर्जुन बनें

यादगार शास्त्रों में लिखा है और संगमयुग में हम देख रहे हैं कि परमात्मा पिता ने सच्चा गीता ज्ञान अर्जुन को सुनाया है। अर्जुन अर्थात् ज्ञान का अर्जन करने वाली आत्मा, अर्जुन माना अलौकिक जन और अर्जुन अर्थात् प्रथम दर्जे में आने वाली आत्मा जिसने अपने जीवन रूपी रथ की डोर परमात्मा के हाथों में सौंप दी है, इसी कारण वह युद्ध में भी निश्चिंत है और उसकी विजय भी निश्चित है। मैं चाहता हूँ कि आप ऐसे अर्जुन बनें।

अभिमन्यु की तरह न बनें

अभिमन्यु की तरह न बनें जिसने माता के गर्भ में ही चक्रव्यूह का ज्ञान प्राप्त कर लिया था। अभिमन्यु अर्थात् अभि + मन + न्यु। एक ऐसी आत्मा जो शरीर रूपी रथ में विराजमान है और वर्तमान समय (अभी) अपने मन में चक्रव्यूह (इंटरनेट) का नया (न्यु) ज्ञान ग्रहण कर रही है, जिसे यह तो पता है कि चक्रव्यूह में जाना कैसे है लेकिन यह ज्ञान नहीं है कि वापिस आना कैसे है।

द्रोणाचार्य ने रचा चक्रव्यूह

यादगार महाग्रंथ महाभारत में अभिमन्यु के प्रति कहा गया है कि वे वीरता में युधिष्ठिर के समान, व्यवहार में श्रीकृष्ण के समान, बल में भीम के समान, विद्या में अर्जुन के समान तथा विनय में नकुल और सहदेव के समान थे। यह महिमा उनके दिव्यगुणों को दर्शाती है। यादगार शास्त्र में यह भी कहा गया है कि महाभारत युद्ध में जब भीष्म ने कौरव सेना के सेनापति का दायित्व छोड़ दिया तो यह पद द्रोणाचार्य को सौंप दिया गया था। द्रोणाचार्य ने पांडवों पर जीत प्राप्त करने के लिए अर्जुन की अनुपस्थिति में दुर्योधन के उकसाने पर चक्रव्यूह का निर्माण किया था जिसे तोड़ने का ज्ञान केवल अर्जुन और उनके सारथी श्रीकृष्ण के पास ही था।

इंटरनेट रूपी चक्रव्यूह

जब ब्रह्मा बाबा साकार में थे तब इंटरनेट जैसे चक्रव्यूह का निर्माण नहीं किया गया था इसलिए शास्त्रों में दर्शाया गया है कि अर्जुन की अनुपस्थिति में ही चक्रव्यूह का निर्माण किया गया। वर्तमान समय इंटरनेट एक ऐसा चक्रव्यूह बन गया है जो मनुष्यों की नकारात्मक वृत्तियों को उकसाकर धन का दुरुपयोग तो करवा ही रहा है, साथ में लोग इसके गुलाम भी बनते जा रहे हैं। इंटरनेट के इस व्यसन को तोड़ने के लिए आत्मा को हे अर्जुन बनना अति आवश्यक है। अभिमन्यु के पास चक्रव्यूह में प्रवेश कर छह द्वार तोड़ने तक का ही ज्ञान था, सातवाँ द्वार तोड़कर बाहर निकलने की विद्या उसके पास नहीं थी। जब वह चक्रव्यूह में प्रवेश करता है तो शुरूआत में बाण वर्षा से जयद्रथ और बड़े-बड़े योद्धाओं को मूर्च्छित कर देता है। तब द्रोणाचार्य स्पष्ट कहते हैं कि हाथ में धनुष-बाण लिए इस बालक को जीतना असंभव है। अत: अभिमन्यु जब केन्द्र स्थान पर पहुँच जाता है तब वहाँ द्वन्द्व युद्ध (बिना हथियारों के) में दुर्योधन पुत्र बड़ी क्रूरता के साथ अभिमन्यु के मस्तिष्क पर प्रहार कर उसे मार डालता है। इस तरह निहत्थे बालक की

अन्यायपूर्वक हत्या की जाती है।

जज करना है आपको

वास्तव में जब कोई ज्ञानी आत्मा इंटरनेट का उपयोग ज्ञान-मुरली पढ़ने के लिए, स्वउन्नति के लिए या अपने पुरुषार्थ को तीव्र करने के लिए करती है तो जैसे वह ज्ञान रूपी बाणों द्वारा इंटरनेट में समाहित माया को मूर्च्छित कर देती है। इस पर ही द्रोणाचार्य स्पष्ट कहते हैं कि धनुष-बाण लिए हुए इस बालक को जीतना असंभव है। अतः माया पहले ज्ञान-मुरली रूपी धनुष-बाण से ज्ञानी आत्मा को वंचित करती है। फिर वह आत्मा अपने धन का दुरुपयोग कर इंटरनेट रूपी अंतर्जाल (कलियुगी मनुष्यों द्वारा रचित चक्रव्यूह) में सर्च करते-करते विभिन्न साइट्स (सर्कल) पर चली जाती है। फिर एक दिन ऐसा जरूर आता है कि वह अपने ऊँच लक्ष्य से भटक जाती है, माया उसकी बुद्धि पर जोर से प्रहार कर देती है और वह ऊँच पद से हार खा लेती है। अब यह आपको जज करना है कि हे अर्जुन बनकर स्वयं को विजय माला में पिरोना है या अभिमन्यू बन चक्रव्यूह के जाल में फँसकर हार खानी है?

मेरी तो सदा यही शुभभावना है कि आप अर्जुन की तरह अपने जीवन की डोर प्यारे शिव बाबा के हाथों में सौंप, हर कल्प के लिए अपनी विजय निश्चित कर लें। ❖

मन से बातें

ब्रह्माकुमारी उषा तिवारी, कोलकाता

मुझे ईश्वरीय ज्ञान में आये पाँच साल हो गये। मैं 11 अगस्त, 2015 के तपस्या के कार्यक्रम में आबू गयी थी। आने के बाद संकल्पों के तूफान तो बहुत उठे पर मैं बाबा का दिया हुआ स्लोगन, 'तुम व्यर्थ को समर्थ करने वाली आत्मा हो', को पढ़ती और व्यर्थ पर कंट्रोल कर लेती। लेकिन धीरे-धीरे मन में बहुत संकल्प उठने लगे और योग कम होने लगा। जितना बाबा को याद करने की कोशिश करती उतने ही व्यर्थ संकल्प खींचते और तनाव होने लगता। यहाँ तक कि अमृतवेला भी मिस होने लगा। सेवाकेन्द्र पर जाती तो वहाँ भी मन नहीं लगता। मन रोने जैसा होने लगा, उमंग ढीला पड़ गया।

एक दिन घर में अकेली थी, एकान्त था, मैं मंदिर से उठी, पेन लिया और लिखने लगी – ''मेरे मन, तुम पूर्वज आत्मा के मन हो, तुम्हारे एक संकल्प का प्रभाव सभी आत्माओं पर पड़ता है। तुम चाहो तो इन संकल्पों को अच्छा बना सकते हो, चाहो तो बुरा। इसलिए तुम अभी वही सोचो जिससे स्व का और सर्व का कल्याण हो। तुम शांत रहो, पवित्र रहो, शुद्ध संकल्पधारी रहो। इधर-उधर भटकना तुम्हारी वृत्ति नहीं है, तुम्हें अब बाबा की याद में उन चीज़ों का त्याग करना है जो याद में विघ्न डालती हैं। हे मेरे मन, तुम निरंतर एक से जुड़े रहो। यह तपस्या का मार्ग 5000 साल में सिर्फ एक बार ही मिलता है। हे मन, अब तुम्हें ईश्वर के बारे में ही सोचना है जिसने तुम्हें वर्सा दिया, अपने खज़ाने दिये, प्यार दिया। उस टीचर के बारे में सोचना है जिसकी पढ़ाई से तुम्हें राजाई मिलने वाली है। उस सतगुरु के बारे में सोचना है जिसने गाइड किया, घर का रास्ता बताया और घर ले जाने आया है। अब बताओ, तुम कितने भाग्यशाली हो। अब व्यर्थ में नहीं जाना, व्यर्थ को छुट्टी दे दो। हे मन, आज तुम्हें शिवबाबा की मत पर चलना है, आज बाबा से ही प्यार भरी बातें करनी हैं।'' फिर मैंने अपनी बुद्धि को भी समझाया, ''हे बुद्धि, तुम किसी भी बात में मन को अशांत नहीं होने देना। तुम सद्विवेक हो, बाबा ने तुम्हें दिव्यता का वरदान दिया है। दिव्यता ही साइलेंस की शक्ति का आधार है। आज तुम एक दिन के लिये मन और मुख को छुट्टी दे दो।''

इस तरह बातें करने के बाद टेन्शन खत्म हो गया। याद की यात्रा अच्छी होने लगी। योग का चार्ट बढ़ गया। पर ये सब करने से पहले अपना लक्ष्य रोज बाबा के सामने दोहराती थी, वो लक्ष्य था, ज्यादा से ज्यादा स्मृतिस्वरूप रहना। ❖

चैतन्य शक्ति का प्रथम अनुभव

ब्रह्माकुमार संदीप, केरानीबांध, बांकुरा (पश्चिम बंगाल)

अध्यात्म प्रधान देश भारत में हम युगों-युगों से अनेक शास्त्रों में आत्मा, परमात्मा से सम्बन्धित अनेक प्रसंग पढ़ते-सुनते आए हैं परंतु आत्मानुभूति या परमात्मानुभूति के लिए उन्हें व्यवहारिक जीवन में किस प्रकार लाया जाए, यह कभी हमारे ज़ेहन में नहीं आया। यही कारण है कि सत्य और असत्य के बीच अन्तर स्पष्ट न होने से हमारा जीवन क्रमश: निम्न स्तर की ओर गिरता गया। अनेकानेक प्रश्नों तथा संशयों के जाल में मन फँसता चला गया। सोचने लगे कि क्या ईश्वर वास्तव में कोई है या सिर्फ मानव का एक भ्रम मात्र है? अगर ईश्वर का अस्तित्व सत्य है तो फिर उसका प्रमाण क्या है? क्यों मनुष्य इतनी खोज और भक्ति के बावजूद भी दुख की चरम यंत्रणा भोग रहा है? भूख-प्यास में तड़पते इन्सानों की, समाज द्वारा लांछित इन्सानों की पीड़ा ईश्वर क्यों नहीं मिटाता? वे मुक्ति की प्राप्ति से वंचित क्यों हैं?

बातें अन्तर्मन को छूने लगी

उपरोक्त प्रश्नों के अलावा मेरे मन में जो विचार सर्वाधिक घर किए हुए था वह यह था कि अगर परमात्मा वास्तव में हैं तो इसी जन्म में प्रत्यक्ष देखना चाहता हूँ.....क्या यह संभव होगा? प्रश्नों और संशयों के मायाजाल में फंसा मैं जीवन नैया को खेता जा रहा था। तभी अचानक एक दिन रिमोट का बटन दबाते-दबाते टी.वी.के पर्दे पर आया, 'Awakening With Brahma Kumaris' प्रोग्राम। श्वेत वस्त्रधारी शान्तचित्त महिला जिन गहन आध्यात्मिक सत्यों के बारे में कह रही थी उन्हें सुनने में मेरा मन मगन होता चला गया। उसके बाद दूसरे दिन भी सुना। उनकी बातें अन्तर्मन को इतनी छूने लगी कि रोज़ सुनने लगा। एक नशा-सा हो गया सुनने का। मन के अनेक प्रश्नों का बिना पूछे ही जवाब मिलता जा रहा था। कार्य होते भी उस कार्यक्रम को सुनना ज़रूरी लगता। परीक्षा के समय भी सुनना नहीं छोड़ा। कार्यक्रम ऐसा मन को भा गया जैसे प्यासे को पानी मिल गया हो। आत्मा, परमात्मा की व्याख्या, सृष्टि रूपी नाटक की रहस्य भरी बातों से सारे अनसुलझे प्रश्नों का सहज समाधान मिल गया। लगातार दो वर्षों तक मैं वह कार्यक्रम देखता रहा, इसके बाद नज़दीकी सेवाकेन्द्र पर साप्ताहिक ज्ञान का कोर्स प्राप्त कर ज्ञान सागर की लहरों में लहराने लगा। सेवाकेन्द्र का शान्त, मधुर, ज्ञानमय परिवेश मुझे नित्य आने के लिए बाध्य करता परंतु ज्ञान-योग के मार्ग पर चलने के लिए कुछ ईश्वरीय अनुभव प्राप्त करने की इच्छा मन में बार-बार जागती रही।

बेहद अपने-पन व सुख की अनुभूति हुई

दिनांक 18-04-11 को हुए अलौकिक अनुभव ने मेरे मन के सारे संशय मिटा दिये। उस दिन घर पर छोटी बहन की शादी का बहुत बड़ा आयोजन था। ज़रूरी कार्यों में व्यस्त रहने के कारण शरीर और मन बहुत थके हुए थे। सोने के थोड़ी देर बाद भोर के समय एक अद्भुत अनुभव मिला। मैंने देखा कि मैं एक प्रकाश-पुंज के रूप में तीव्र वेग से करेन्ट की तरह शरीर से बाहर निकल गया हूँ और ऊपर उड़ता जा रहा हूँ। भय का भी आभास हो रहा था परंतु कुछ समय के बाद देखा कि एक अति प्रकाशमय फरिश्ता-सा मेरे पास खड़ा है और फिर उस पावन फरिश्ते की स्नेहमई दृष्टि से पल भर में ही मेरा भय समाप्त हो गया। बेहद अपने-पन व सुख की अनुभूति होने लगी। निश्चय हो गया कि ये वही जन्म-जन्मांतर के अदृश्य साथी मेरे बाबा ही हैं।

सवेरे भी बार-बार वही सुखद अनुभव की बात याद आती रही। मन खुशी से भरपूर, गद्‌गद हो रहा था। इस कल्प में पहली बार हुए इस दिव्य अनुभव ने मुझे अशरीरीपन का पल भर में अहसास कराया। मैं कभी भूल नहीं सकता बाबा का वो प्यार भरा महावाक्य, ''मीठे बच्चे, तुम एक ज्योतिर्बिन्दु आत्मा हो, चैतन्य हो।'' यह अनुभव सत्य का बोध कराने के लिए काफी है।

इस प्रकार के अनुभव अब मुझे बीच-बीच में होते रहते हैं। अशरीरी रूप में बाबा के साथ के ये अनुभव ही वास्तव में मेरे इस ईश्वरीय जीवन में आगे बढ़ने के सोपान बन गए हैं। अब तो मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस साथ के अनुभव से मैं जीवन की हर कठिन परिस्थिति व विघ्नों का सहज सामना कर सकता हूँ क्योंकि भगवान सर्वशक्तिमान स्वयं मेरे साथी हैं। दिल में यही गीत गूंजता है –

''बाबा मेरे साथ है, हाथ में उसके हाथ है,
तो डरने की क्या बात है..।''

अतीन्द्रिय नशा

ब्रह्माकुमार उधम सिंह, कैथल (हरियाणा)

मेरी आयु 28 वर्ष है, जब बच्चे खेल-कूद करते हैं, माँ-बाप की स्नेह भरी पालना में पलते हैं (7-8 वर्ष की आयु) तब मैं नशे की गिरफ्त में आ गया। चरस, गाँजा, अफीम व शराब आदि कुछ भी मुझसे नहीं छूटा। नशे के साथ-साथ हिंसक वृत्ति भी दिनों-दिन बढ़ती गई। मारपीट, झगड़े मेरी दिनचर्या बन गए। एक बार झगड़ा इतना बढ़ा कि जेल जाना पड़ा परन्तु इससे भी मेरे कुत्सित विचारों पर कोई प्रतिबंध नहीं लगा बल्कि जेल मेरे लिए अपराध का प्रशिक्षण केन्द्र बन गई। ज़िन्दगी जहन्नुम बनती जा रही थी। माँ-बाप मेरे कारण समाज में शर्मिन्दा थे, अनेक युवा मेरे सम्पर्क में आकर भटक रहे थे और मुझे इन सबकी कोई परवाह नहीं थी। सबको लगने लगा कि मृत्यु ही मेरे इन कर्मों पर विराम लगा सकती है। बस एक ही अच्छी बात थी, मैं शिव की पूजा, व्रत, तीर्थ-यात्रा खूब करता था।

बरसों बाद मिला सच्चा सुकून

धीरे-धीरे मैं इन सब चीजों से थक गया, सभी साथी स्वार्थी और खोखले लगने लगे। जीवन रसहीन हो गया। एक दिन मुझे एक माता जी मिली, जो ब्रह्माकुमारीज संस्था में जाती हैं। मेरे नशे की हालत में ही उन्होंने शिव-अवतरण के बारे में मुझे बताया। उनके साथ आश्रम जाने लगा, असीम शान्ति का अनुभव हुआ। बरसों बाद मुझे सच्चा सुकून मिला। दो महीने के अन्दर ही मेरे सभी बुरे संस्कार छूट गए, यह मेरे लिए भी चमत्कार था। सभी मर्यादाओं का पालन करने के एक साल बाद मधुबन (माउन्ट आबू) में परमपिता के सामने पहुँचा जिनसे मिलन की कभी कल्पना तक नहीं की थी। बस यह दृश्य न कभी भूल सकता हूँ और न उसका वर्णन ही कर सकता हूँ। मेरा जीवन पूरी तरह बदल दिया बाबा ने। अब मैं सप्ताह में 5 दिन ईश्वरीय सेवा पर जाता हूँ। राजयोग के कोर्स कराता हूँ। अब गाँव के लोग कहते हैं कि हमारे बच्चों का जीवन भी सुधार दे। कहा गया है, 'पीने से जिसको चढ़ती खुमारी है, पीता है जो परम से तो घटती बीमारी है।' नशा मैं अब भी करता हूँ पर अतीन्द्रिय नशा जिसने मुझे जीना सिखा दिया।

सभी भाई-बहनों से मेरा अनुरोध है कि इस संगम समय पर कल्प-कल्प के लिए अपना भाग्य बना लें और शिव पिता से वर्सा ले लें क्योंकि अभी नहीं तो कभी नहीं।

❖

खेल स्मृति और विस्मृति का

ब्रह्माकुमारी चन्द्रिका, दहानूकरवाडी, कान्दीवली प.(मुम्बई)

स्मृति अर्थात् याद और विस्मृति अर्थात् भूल जाना। अशोक नामक युवक एक बार रास्ते चलते एक व्यक्ति के बारे में सोचता जा रहा था जो उसका दुश्मन बना था। वह सोच रहा था कि उस व्यक्ति ने मेरे साथ ठीक व्यवहार नहीं किया। सबके सामने मेरा अपमान कर मेरे साथ दुश्मनी मोल ली है, मैं उसे सबक सिखाकर रहूँगा। उतने में एक पुराना मित्र उसके सामने आ गया। दुश्मन की स्मृति में खोया अशोक उसे पहचान नहीं पाया। मित्र ने ही उसे पहचान दी कि अरे दोस्त अशोक, तुमने मुझे पहचाना नहीं? कुछ साल पहले मैंने तुम्हारी आवश्यकता के समय अपना एक खाली मकान रहने के लिए दिया था। कुछ क्षण के बाद अशोक को इस बात की स्मृति आई और कहा, हाँ हाँ.... याद आया, कैसे हो मित्र?

नकारात्मक छप गया, सकारात्मक भूल गया

उपरोक्त से एक बात स्पष्ट है कि अशोक को वे बातें और व्यक्ति बिल्कुल स्मृति में हैं जिन्होंने उसे तकलीफ पहुँचायी थी और उस व्यक्ति और बातों को वो भूल गया जिन्होंने उसे सहयोग दिया था। भावार्थ यह है कि नकारात्मक बातें बुद्धि में छप चुकी हैं और सकारात्मक बातें भूल गया है। कितने अफसोस की बात है कि व्यक्ति को जो याद रखना है वह भूल जाता है और जो भूल जाना है उसे याद रख लेता है। स्मृति और विस्मृति के इस खेल को सही रूप से न खेलने के कारण ही मानव दुखी और उदास रहता है। यदि वह सही रूप से खेलने लग जाये तो स्वर्गीय सुख का अनुभव कर सकता है। कई खेल ऐसे होते हैं जिनकी समय अवधि लम्बी होती है परन्तु स्मृति-विस्मृति का खेल तो सेकण्ड का है। किसी भी स्मृति को हम एक सेकण्ड में इमर्ज कर सकते हैं, चाहे वह ऊँची, अच्छी, साधारण, व्यर्थ या बुरी हो।

अन्तिम पेपर 'नष्टोमोहा स्मृतिर्लब्धा'

ऊंची और सकारात्मक घटनाओं की स्मृति हमें खुशी दिलाती है। इसका अर्थ यह हुआ कि यदि खुशी चाहिए तो हम सेकण्ड में प्राप्त कर सकते हैं। इसलिए स्मृति को शक्ति भी कहा जाता है जिस शक्ति के द्वारा हम परमात्मा पिता से अखुट, अविनाशी, अमूल्य खजाना प्राप्त कर सकते हैं। शिव बाबा ने कहा है, अंतिम समय के सेकण्ड के पेपर का प्रश्न होगा 'नष्टोमोहा स्मृतिर्लब्धा।' जब देह, देह के पदार्थ, देह के संबंध, देह की दुनिया आदि से मोह नष्ट कर एक बाबा (बिन्दु) की स्मृति में स्थित होंगे तब 'पास विद ऑनर' होंगे अर्थात् अन्तिम परीक्षा में भी स्मृति और विस्मृति का विशेष महत्व होगा। लौकिक शिक्षक परीक्षा का समय अवश्य बताते हैं परन्तु परीक्षा में पूछा जाने वाला प्रश्न नहीं बताते। सुप्रीम टीचर शिवबाबा ने हमें परीक्षा का समय नहीं बताया पर प्रश्न बता दिया है ताकि हम उसकी पूर्व तैयारी कर सकें।

कहते हैं, 'अंधकार से घबराओ नहीं, हाथ में जलता दीया पकड़ चलते चलो तो रास्ता स्वत: दिखाई देगा' अर्थात् परिस्थितियों के अंधकार से घबराओ नहीं, परमात्म स्मृति का दीया जलाकर रखो तो स्वत: आगे बढ़ते जायेंगे। ईश्वरीय स्मृतियों की किरणें आत्मा को पवित्रता की रोशनी में ले आती हैं और आत्मा में भरे विकारों के कीटाणुओं को नष्ट करती हैं। स्वमान की स्मृतियों की वर्षा मन को हराभरा कर देती है। उन्नति के शिखर पर पहुँचने के लिए निम्नलिखित 10 बातें याद रखें और 10 बातें भूल जायें –

याद रखने वाली बातें

1. जो जीवन में मिला है,
2. वर्तमान काल,
3. खुशी के प्रसंग,
4. जीवन का लक्ष्य,

(शेष..पृष्ठ 32 पर)

वाह बाबा वाह !

ब्रह्माकुमार डॉ.पंकज कुमार देव, अगरतल्ला

मैं इंदिरा गांधी मेमोरियल सरकारी हॉस्पिटल, अगरतल्ला में सेवारत हूँ। युगल और दो कन्याओं सहित हम चारों ईश्वरीय ज्ञान में हैं। सन् 2002 में जब सेवाकेन्द्र पर जाकर सात दिन का कोर्स करना शुरू किया तो पहले ही दिन तेज बारिश हो रही थी। लेकिन कमाल ईश्वरीय शक्ति की, युगल के साथ स्कूटर पर होते हुए भी बारिश हमें छू भी नहीं रही थी अर्थात् दायें-बायें बारिश पड़ रही थी लेकिन हमारे रास्ते में नहीं हो रही थी। बाद में भी ऐसा होता रहा कि घर से निकलने से थोड़ी देर पहले बारिश हो रही होती थी और सेवाकेन्द्र पहुँचने के बाद फिर झम-झम गिरती थी। हमें आश्चर्य होता था कि ऐसा कैसे हो रहा है, अवश्य ही अदृश्य शक्ति मदद कर रही है! इससे मन में ईश्वर के प्रति निश्चय बढ़ा और बाद में मालूम पड़ा कि यह सब प्रकृतिपति शिव बाबा की कमाल थी। वाह बाबा वाह!

लेटे हुए नारायण का स्पष्ट चित्र देखा

कोर्स के आखिरी दिन बहन जी ने हमें योग सिखाया और बाबा के कमरे में बाबा के चित्र के सामने बिठा दिया। योग की कॉमेन्ट्री चल रही थी, गहरी शांति की अनुभूति हुई और लेटे हुए नारायण का स्पष्ट चित्र देखा। बाद में समझ में आया कि बाबा ने मुझे मेरे लक्ष्य 'नर से नारायण' का साक्षात्कार कराया है। अभी सोचता हूँ, कितना प्यार करते हैं बाबा मुझे, दिल से निकलता है, वाह बाबा वाह!

विश्व की सबसे महान हस्ती से मुलाकात

सन् 2003 में सपरिवार मधुबन में बाबा से मिलन मनाने के लिए गया। पहुँचते ही अनुभव किया कि दुनिया में कहीं स्वर्ग है तो यहाँ ही है। पवित्रता और शान्ति के प्रकम्पन भाई-बहनों के चेहरों पर तो क्या, हवा में और पेड़ों के पत्ते-पत्ते में गूँज रहे थे। विश्व में उस समय की सबसे महान हस्ती दादी प्रकाशमणि जी से मंच पर मुलाकात हुई। दादी जी की दृष्टि मिली तो ऐसा अनुभव हुआ कि उन्होंने हम चारों को पहचान लिया और बहुत आत्मीयता भरी मुसकान से भरपूर किया। क्लास के बाद जब दादी जी गाड़ी में बैठने लगी तो पुनः हमको देखा और इशारे से बुलाया, हाथ बढ़ाया, हैन्ड शेक किया और कहा, 'अगरतल्ला से, इतनी दूर से आये हो?' दादी जी से हैन्ड शेक किया तो ऐसा लगा कि फरिश्ते का स्पर्श है। मैं सोचने लगा, यह सच है कि अव्यक्त वतन में हड्डी-माँस वाला शरीर नहीं होता परन्तु यहाँ स्थूल लोक में भी दादी जी के शरीर में जैसे कि कोई हड्डी है ही नहीं। रूई जैसा कोमल शरीर, दादी जी ने वास्तव में दधीचि ऋषि मिसल हड्डी-हड्डी सेवा में लगाई है तो प्रकृति भी ऐसी बन गई है।

हम बच गए

सन् 2004 में हम कुछ साथी कन्याकुमारी गये। साथियों का विचार था कि सूर्योदय का दृश्य देख लें। मेरे मन में आया कि सूर्योदय देखने के कारण सवेरे की मुरली क्लास छूटनी नहीं चाहिए। साथियों के बहुत आग्रह के बावजूद मैंने इस कार्यक्रम को कैन्सिल कर दिया। मैं उनका अगुआ था इसलिए उन्होंने भी अपना विचार छोड़ दिया और मेरे साथ वापस आ गये। इसके बाद दूसरे ही दिन विनाश का ताण्डव मचा। कन्याकुमारी तो क्या इन्डोनेशिया, श्रीलंका आदि स्थानों पर सुनामी की लहरों ने तबाही मचा दी पर हम बच गये। बाद में सभी तरफ से फोन आने लगे और हमें बधाइयाँ देने लगे। मैं चुपचाप सुनता रहा और बधाइयाँ बाबा को देता रहा। वाह बाबा वाह! आपने क्या कमाल किया!

मस्तक में दिखी तीसरी आँख

सन् 2011 में बाबा से मिलने मैं अकेला ही गया। सौगात देने के लिए दादियों ने मंच पर सबको बुलाया तो देखता हूँ कि सभी की भ्रकुटि में एक और आँख है। मुझे लगा, ये दादियाँ तो त्रिनेत्री देवियाँ हैं। बाद में खुद को व जिसको देखता हूँ सबके मस्तक में तीसरा नेत्र दिखाई देने

लगा। बाबा से मिलने के समय डायमण्ड हॉल में बैठा तो बिजली के करंट जैसा शक्तिशाली करंट मस्तक से होते हुए आत्मा में प्रवेश होने लगा। विज्ञान पढ़ा हुआ होने के कारण मैंने इसे भ्रम समझा और आँखों तथा मस्तक को मला, फिर भी घण्टों तक वही अनुभूति रही। असल में बाबा ने ज्ञान के कई गुह्य राज़ एवं योग की ऊँची अनुभूतियों को इतनी सहजता से स्पष्ट किया और अनुभव कराया कि भूले नहीं भूलता, दिल की डिब्बी में सदा सहज स्मरण रहता है। लौकिक जिम्मेवारी और डॉक्टरी के पेशे में इतना व्यस्त रहना होता है, पुरुषार्थ या योग के लिए समय कम ही निकल पाता है इसलिए शायद पुरुषार्थ को सहज करने के लिए बाबा ऐसी अलौकिक अनुभूतियाँ कराते रहते हैं।

मैं ज्यादा कुछ नहीं जानता, न ज्यादा मेहनत करता हूँ, बस, बाबा को दिल से प्यार करता हूँ और बाबा की मुरली क्लास कभी मिस नहीं करता, बाकी सब बाबा करा देते हैं। इसलिए ही दिल गा उठता है, वाह बाबा वाह! ❖

सफल हो रहा है तन, मन, धन

ब्रह्माकुमारी रेनू, पंचकुला (हरियाणा)

मैं पिछले 11 वर्षों से परिवार सहित सहज राजयोग की शिक्षा ले रही हूँ। ईश्वरीय ज्ञान में आने से पहले परमात्मा के विषय में कुछ भी पता नहीं था। नवम्बर, 2004 में लौकिक बहन, जो 3 महीने से ज्ञान में थी, ने मुझे आध्यात्मिक ज्ञान की किताब 'साप्ताहिक पाठ्यक्रम' पढ़ने के लिए दी। उसे पढ़ने से बुद्धि का ताला हल्का-सा खुला। फिर उस किताब को 3-4 बार पढ़ा। जितनी बार पढ़ा, उतनी बार अपने बारे में, परमात्मा के बारे में बहुत कुछ पता चलता गया। फिर इच्छा जागी कि और किताबें पढ़ूँ। 'योग की विधि और सिद्धि', 'आत्मा-परमात्मा का परिचय', 'आत्मा के तीनों कालों की कहानी' आदि बहुत-सी किताबों को पढ़ना शुरू कर दिया। इन किताबों से भी बहुत ज्ञान समझा, फिर ज्ञान का साप्ताहिक कोर्स किया। कोर्स के बाद आत्मा की सोई हुई सारी शक्तियाँ ही जागृत हो गई। ज्ञान का नशा दिन-प्रतिदिन बढ़ता ही गया। राजयोग से इतनी प्राप्तियाँ हुईं कि एक किताब लिखी जा सकती है। प्यारे बाबा ने कल्प पहले की विशेषताओं के आधार पर चुनकर मुझे अपना बना लिया। पढ़ने-लिखने के शौक ने मुझे सेवाकेन्द्र पर अनेक आत्माओं को कोर्स करवाने के निमित्त बना दिया। ज्ञान में आने के बाद अपनी सभी विशेषताएँ बाबा के यज्ञ में लगाकर तन, मन, धन, समय, श्वास, संकल्प सब सफल हो रहे हैं। कितनी बार इस दिल से उस प्यारे बाबा का शुक्रिया करूँ जिसने मुझे अपना दिलतख़्तनशीन बना लिया। आप भी नज़दीकी ब्रह्माकुमारी आश्रम में जाकर ईश्वरीय ज्ञान को समझें जिससे वर्तमान तो क्या आगे के सभी जन्म सफल हो जाएँ। ❖

खेल, स्मृति और...पृष्ठ 30 का शेष..

5. परमात्म प्राप्तियों के अनुभव, 6. वे व्यक्ति जिनकी सोच ऊँची हो, 7. जो नैतिकता के साथ जीते हैं, 8. जो आध्यात्मिक मार्ग पर अग्रसर हैं, 9. किसी के द्वारा किया गया परोपकार, 10. समस्याओं से पाई हुई प्रेरणायें

भूलने वाली बातें :- 1. दूसरों को दिया हुआ सहयोग, 2. समय व्यर्थ गँवाने वाली बातें, 3. दुखद घटनायें, 4. उत्तेजित करने वाले प्रसंग, 5. पुरुषार्थ में मिली हुई निष्फलता, 6. औरों के अवगुण, 7. भूतकाल की समस्यायें, 8. दूसरों की गलतियाँ, 9. लोगों से मिली प्रशंसा, 10. अप्राप्तियाँ

आवश्यक सूचना

(सदस्यता शुल्क से संबंधित)

1. नये वर्ष 2016-17 में 'ज्ञानामृत' तथा 'द वर्ल्ड रिन्युअल' पत्रिकाओं का भारत में वार्षिक शुल्क 100 रुपये तथा विदेशों में वार्षिक शुल्क 1,000 रुपये रहेगा। आजीवन शुल्क भारत में 2,000 रुपये तथा विदेश में 10,000 रुपये रहेगा।
2. शुल्क राशि भेजते समय किसी के भी पर्सनल नाम पर नहीं भेजें, केवल 'ज्ञानामृत' या 'The World Renewal' के नाम पर ड्राफ्ट, मनीऑर्डर या डाकघर द्वारा EMO से भेजें। शान्तिवन डाकघर में ई.मनीऑर्डर (EMO) सुविधा उपलब्ध है जिस द्वारा उसी दिन 10 मिनट के अंदर भारत के किसी भी कोने से पत्रिकाओं की राशि शान्तिवन डाकघर में पहुँच जाती है जिसका पिन कोड नं. 307510 है। EMO के लिए मनीऑर्डर की तरह ही अपना पूरा पता तथा पिन कोड नं. अवश्य देना होता है। साथ में फोन नंबर तथा ई-मेल ID जरूर लिखें।
3. आपको ज्ञात होगा कि स्टेट बैंक ऑफ इंडिया (SBI) की ब्रांच **P.B.K.I.V.V.शान्तिवन** में है।
4. ड्राफ्ट के ऊपर केवल 'ज्ञानामृत, शान्तिवन' या 'The World Renewal, Shantivan' ही लिखें। किसी व्यक्ति या शहर का नाम न लिखें।
5. अभी आप ऑनलाइन भुगतान सुविधा द्वारा भी ज्ञानामृत के सदस्य बन सकते हैं। बैंक एकाउंट का विवरण निम्नलिखित है –

   बैंक का नाम : स्टेट बैंक ऑफ इंडिया
   बैंक ब्रांच का नाम : शान्तिवन
   सेविंग बैंक एकाउंट नंबर : 30297656367
   सेविंग बैंक एकाउंट का नाम: World Renewal Gyanamrit
   IFS Code : SBIN0010638

   ऑनलाइन भुगतान करने के बाद नीचे लिखे ई-मेल पर अपना पूरा पता और बैंक भुगतान का पूरा विवरण भेजें। डिपोजिट केवल NEFT के द्वारा ही करें।
6. नये डायरेक्ट पोस्ट करने वाले पते टाइप करके या बड़े अक्षरों में साफ-साफ अंग्रेजी में ही लिखकर भेजें।

संपर्क के लिए

ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन-307510 (आबू रोड) राजस्थान।
फोन : 02974-228125, फैक्स : 02974-228116
मोबाइल : 09414006904, 09414423949
E-mail : omshantipress@gmail.com, hindigyanamrit@gmail.com

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, सम्पादक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रिन्टिंग प्रेस, शान्तिवन -307510, आबू रोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया। संयुक्त सम्पादिका - ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन
E-mail : omshantipress@bkivv.org Ph. No. : (02974) - 228125 gyanamritpatrika@bkivv.org

1. हिसार- 'मूल्यों एवं आध्यात्मिकता द्वारा स्वस्थ एवं सुखी जीवन' विषयक कार्यक्रम के अवसर पर मंच पर उपस्थित हैं चौ. चरणसिंह कृषि विश्वविद्यालय की डीन बहन राज बाला ग्रेवाल, लाला लाजपत राय यूनिवर्सिटी के रजिस्ट्रार डॉ. प्रदीप सिंह, डॉ. आर.पी. गुप्ता, ब्र.कु. रमेश बहन, भ्राता वेद गुलवानी एवं अन्य। **2.मिश्रिख तीर्थ-** उ.प्र.के कारागार राज्यमंत्री भ्राता रामपाल राजवंशी को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. सरस्वती बहन। **3.जयपुर (वैशाली नगर)-** 'बेटी बचाओ, सशक्त बनाओ' अभियान के उद्घाटन अवसर पर उपस्थित हैं राजस्थान के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री भ्राता राजेन्द्र सिंह राठौड़, ब्र.कु. सुषमा बहन, अभियन्ता भ्राता रामगोपाल डंगायत, ब्र.कु. कमलेश बहन, ब्र.कु. आशा बहन तथा अन्य। **4.मुम्बई-** वर्ल्ड वाटर लीडरशिप कांग्रेस में ब्रह्माकुमारीज़ की तरफ से ब्र.कु. शम्भू भाई एवं ब्र.कु. यशवन्त भाई को 'बेस्ट वाटर मैनेजमेन्ट प्रैक्टिस अवार्ड' देकर सम्मानित करते हुए अफगानिस्तान की पूर्व मंत्री एवं जलाल फाउंडेशन की अध्यक्षा बहन डॉ. मसौदा जलाल। **5.होशियारपुर-** पंजाब के स्वास्थ्य मंत्री भ्राता सुरजीत कुमार ज्याणी को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. राजकुमारी बहन। **6.हमीरपुर-** हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री भ्राता वीरभद्र सिंह को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. ज्योति बहन। **7.भिलाई नगर-** ओमशान्ति चौक के उद्घाटन के बाद समूह चित्र में हैं छत्तीसगढ़ के उच्च शिक्षा मंत्री भ्राता प्रेम प्रकाश पाण्डे, पूर्व महापौर बहन निर्मला यादव, ब्र.कु. वर्षा बहन, ब्र.कु. आशा बहन, विधायक विद्यारतन भसीन एवं अन्य। **8.भिवानी-** हरियाणा के कृषि मंत्री भ्राता ओमप्रकाश धनखड़ को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. सुमित्रा बहन।

RNI No.10563/1965, Postal Regd. No.RJ/SRO/9559/2015-2017 Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment No. RJ/WR/WPP/002/2015-2017. Published on 20th of each Month &
Posted on 26th to 1st of each month. Price 1 copy Rs. 8.50, Issue : April, 2016.

आबू रोड-
महाशिवरात्रि महोत्सव तथा मेले का उद्‌घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी जानकी जी, दादी रतनमोहिनी जी, ब्र.कु. करुणा भाई, ब्र.कु. भरत भाई एवं अन्य।

काठमाण्डू-
सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश डॉ. भ्राता दीपक राज जोशी को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. राज बहन।

नई दिल्ली- स्वस्थ और सुखी जीवन के लिए दस दिवसीय 'राजयोग उत्सव' का शुभारंभ करते हुए दिल्ली के महिला एवं बाल विकास मंत्री भ्राता संदीप कुमार, दिल्ली विधानसभा की उपाध्यक्षा बहन वंदना कुमार, अखिल भारतीय मस्जिद इमाम संगठन के मुख्य इमाम डॉ. उमर अहमद इलियासी, ब्र.कु. बृजमोहन भाई, महाबोद्धि इंटरनेशनल मेडिटेशन सेंटर, लेह-लद्दाख के संस्थापक भिक्षु संघसेना, ब्र.कु. आशा बहन एवं अन्य।

गुवाहाटी-
'बेटी पढ़ाओ, सशक्त बनाओ' विषयक सम्मेलन का उद्‌घाटन करते हुए ब्र.कु. शीला बहन, डॉ. दिगंत विश्व शर्मा, प्रोफेसर डॉ. नीलमोहन रॉय एवं अन्य।